CULTURE AND CIVILIZATION

A10

HINDI

COMMON COURSE

For

BA/BSc

IV SEMESTER

(CUCBCSS)

(2014 Admission onwards)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

CALICUT UNIVERSITY PO, MALAPPURAM, KERALA, INDIA

673 635

518

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

STUDY MATERIAL

CULTURE AND CIVILIZATION

A10

HINDI
COMMON COURSE For
BA/BSc
IV SEMESTER

(CUCBCSS)

2014 Admission onwards

Prepared By :

Smt. Vanaja K.G. Head of the Department,
Associate Professor, Department of Hindi,
Zamorin's Guruvayurappan College, Calicut.

Scrutinized by :

Dr. N. Girija, Chairperson,
Board of Studies in Hindi UG
Associate Professor of Hindi
Govt. Arts & Science College,
Calicut.

Lay out :
Computer Section, SDE

©
Reserved

Books for study-

1. संस्कृति के विविध आयाम –संपादक- डॉ. अवधेश कुमार।
2. शबरी-नरेश मेहता ।

Module -1	1. संस्कृति अथ और स्वरूप- सोती वीरेन्द्र चन्द्र 2. युवाओं से- स्वामी विवेकानन्द । 3.भारत एक है- रामधारी सिंह दिनकर।
Module -2	4. लोकतन्त्र एक धम है- डॉ. सवपल्ली राधाकृष्णन। 5.संस्कृति और अपसंस्कृति- किशन पटनायक।
Module-3	6.सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत श्री नारायण गुरु- डॉ. इकबाल अहमद 7.दलित आन्दोलन और अय्यनकाली- डॉ.आर. शशिधरन।
Module -4	8.शबरी- खण्ड काव्य- श्री नरेश मेहता।

Module-1

1. संस्कृति अथ और स्वरूप-सोती वीरेन्द्र चन्द्र-

Paragraph questions & answers.

1. संस्कृति शब्द का अथ स्पष्ट कीजिए।

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है। संस्कार का मतलब संशोधन अथवा उत्तम बनानेवाले काय से है। संस्कृति शब्द का अथ है, संस्करण, परिष्करण एवं परिमाजन। संस्कृत का भी अभिप्राय शुद्ध किये काय से है। इस प्रकार संस्कृति शब्द सुसंस्कृत अथात् परिष्कृत एवं परिमाजित स्थिति का बोध कराता है।

2.संस्कृति क्या है?

संस्कृति किसी देश के दशन, परंपराओं एवं विविध कलाओं के विकास का पुष्कल परिणाम होती है। उस देश के धम ,साहित्य, मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों के संचय का नाम संस्कृति है। इस प्रकार संस्कृति पूव परंपराओं, मान्यताओं एवं मूल्यों का संचित कोष होती है तथा वह ऐसी क्रिया है जो मनुष्य म पवित्र एवं दिव्य भावों को प्रस्थापित करती है।

3.संस्कृति के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए ।

संस्कृति मानवीय रचना है, जिसे मानव ने अपने जीवन-यापन प्रणाली संबन्धी उपयोगी तत्वों को विकसित कर रूप दिया। आदिकाल म मानव के जीवन पद्धति संबन्धी आवश्यक सिद्धांत वेदों के माध्यम से प्रदान किये थे। ऋषियों के ज्ञान और वेदों के सिद्धांतों के ही आधार पर आदि संस्कृति अथात् वैदिक संस्कृति ने रूप धारण किया जो प्राचीनतम संस्कृति है।

अत: आदिकाल म मानव की जीवन-विधि से संस्कृति का उद्भव हुआ। मान्यताएँ, आस्थाएँ, प्रथाएँ तथा परंपराएँ आदि संस्कृति का आधारभूत अंग हो गई। संस्कृति मनुष्यों की जीवन-विधियों को इन समाज-स्वीकृत आदर्शों से अवगत कराकर नियंत्रित करने लगी। सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने के लिए संस्कृति मनुष्यों को समाज के एक विशेष ढ़ाँचे म ढाल देती है। संस्कृति मनुष्य के स्वभाव एवं आचरण को निर्धारित नियम के आधार पर एक विशिष्ट दिशा म विकसित करती है। इस प्रकार संस्कृति के विकास म युग –युग की मान्यताएँ समाहित है।

4.संस्कृति को क्यों समाज का व्यक्तित्व कहते ह?

संस्कृति किसी देश या जाति के समाज स्वीकृत तत्वों पर आधारित जीवन पद्धति होती है। संस्कृति किसी देश या जाति की आत्मा के समान है। वह एक देश या जाति की जीवन-दृष्टि होती है। यह सच है कि किसी मानव समुदाय की संस्कृति उसकी सामाजिक भावनाओं, मनोवृत्तियों, परंपरागत मान्यताओं, व्यवहार, रीति-नीति, संगीत,एवं कला कौशल का समन्वित रूप है। इस प्रकार किसी देश या समाज की आचरणगत परंपरा को भी संस्कृति की संज्ञा दी जा सकती है।

5.सांस्कृतिक क्षेत्र क्या है ? और इसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

किसी संस्कृति का प्रचार –प्रसार जिस देश या क्षेत्र म पाया जाता है, उसे वहाँ का सांस्कृतिक क्षेत्र कहते है। स्पष्ट रूप म कह तो –सांस्कृतिक क्षेत्र वह भौगोलिक क्षेत्र है जिनम विशेष प्रकार की सांस्कृतिक प्रणाली पाई जाती है और जहाँ के लोग सामान्यत: एक प्रकार के विश्वास और दृष्टिकोण से प्रभावित होते ह, और उनकी रीति-नीति म कुछ हद तक एकता पाई जाती है। यहाँ जीवन संबन्धी प्रत्येक विषयों का समावेश दिखाई देते है। कह सकते ह कि संस्कृति का क्षेत्र समाज होता है। यहाँ संस्कृति का सीधा संबन्ध एक देश, जाति, या किसी विशिष्ट समाज या जनसमुदाय म प्रचलित धार्मिक आस्थाओं, प्रवृत्तियों, विचार धाराओं, रुचियों, व्यवहारों, स्वभाव, रीति-रिवाज़, एवं रहन-सहन से होता है।

यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों, कला, साहित्य, आदि की अभिव्यक्ति है। जीवन मूल्य एवं जीवन के तत्वों पर महत्व देकर यहाँ संस्कृति को संपूण बनाने की कोशिश ज़ारी है। जीवन दशन और जीवन पद्धति और इनके अन्तगत आनेवाले मानवीय आदर्शों, सद्गुणों, मान्यताओं, राष्ट्रीय मूल्यों आदि इस प्रकार संस्कृति की आत्मा होती है।

6. संस्कृति का उद्देश्य क्या है ?

संस्कृति का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को सुसंस्कृत एवं सभ्य बनाना है। देश या जाति के जीवन को पवित्र एवं परिष्कृत रूप देना है। हमारे आचरण तथा व्यवहार को सुसंस्कृत एवं परिमाजित करने म वह सहायता करती है। संस्कृति मनुष्य म उच्चादर्शों की प्रतिष्ठा करती है। संस्कृति धम, कम एवं त्याग के नियम उत्भूत करती है। किसी देश की संस्कृति का लक्ष्य उसके जनसमुदाय के आचरण एवं आचार-विचार के शुद्धीकरण का होता है। उसम शिष्टतापूवक जीवन व्यतीत करने की पद्धति के आदश निहित रहते ह।

समाज म श्रेष्ठ व्यक्तित्व के विकास म संस्कृति का सराहनीय सहयोग रहता है। साथ म देश के निवासियों की धारणाओं एवं व्यवहारादि की द्योतक है। मूल रूप म शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों का विकास संस्कृति का मुख्य उद्देश्य है।

7.सांस्कृतिक व्यवस्था के बारे म पिटरिम सोरोकिन तथा रवीन्द्र नाथ मुकर्जी के मन्तव्य पर प्रकाश डालिए।

विश्व विख्यात समाज शास्त्री पिटरिम सोरोकिन ने सांस्कृतिक व्यवस्था को तीन प्रकारों म विभाजित किया है- चेतनात्मक, भावनात्मक और आदशात्मक।

चेतनात्मक संस्कृति इन्द्रियों पर निभर होती है। उनके अन्तगत कला की तुलना म विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा भौतिकतावाद को अधिक महत्व मिलता है। पाश्चात्य देशों म चेतनात्मक संस्कृति अधिक लोकप्रिय और व्यापक है। यह मनुष्यों म ऐश्वय एवं वैभवपूण जीवन व्यतीत करने की अधिक अभिरुचि उत्पन्न करती है।

भावनात्मक संस्कृति का आधार इन्द्रियाँ नहीं। इसका आधार भूत- भावना, आत्मा एवं परमात्मा है। इसका उद्देशय है-मनुष्यों को आध्यात्मिकता की ओर ले जाना। । यहाँ आध्यात्मिकता को प्रधान स्थान दिया जाता है। यह मनुष्य को शाश्वत सत्य अपनाने को मदद करती है। मनुष्य को सच्ची आत्मिक शांति भावनात्मक संस्कृति में ही मिलती है। यहाँ मनुष्य मन की शांति की खोज में रहते हैं। आर्थिक जीवन में धन का महत्व कम हो जाता है।

आदर्शात्मक संस्कृति का जन्म चेतनात्मक तथा भावनात्मक संस्कृति के सामंजस्य से होता है। यह भौतिकवाद एवं आध्यात्मिकवाद की धाराओं का संगम है। इसमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा आध्यात्मिक आदर्शों पर समान सम्मान किया जाता है क्योंकि इसमें इन सब का सम्मिश्रण रहता है। इसमें किसी एक विचार धारा पर ही ज़ोर नहीं रहता। आदर्शात्मक संस्कृति की व्यवस्था में कला तक में यथार्थवाद तथा आध्यात्मिकवाद का समन्वय रहता है। अतः आदर्शात्मक संस्कृति न तो भौतिकवाद के ही बिलकुल विरुद्ध है और न आध्यात्मिकवाद के ही। इसप्रकार सांस्कृतिक व्यवस्था में उपयुक्त दोनों के वादों का मिश्रण ही हम देख सकते है।

8.संस्कृति और सभ्यता का क्या संबन्ध है? स्पष्ट कीजिए।

संस्कृति एवं सभ्यता में घनिष्ठ संबन्ध है। दोनों आपस में जुडे हुए ही प्रतीत होता है। वास्तव में संस्कृति एवं सभ्यता में पर्याप्त भेद है। दोनों में सामंजस्य है, तो भी शाब्दिक अर्थ भिन्न है।

प्रत्येक संस्कृति की एक सभ्यता होती है। एक दृष्टि में सभ्यता, संस्कृति का विकसित रूप है। सभ्यता का संबन्ध मनुष्य के विचारों से है जबकि संस्कृति का संबन्ध उसके आचारों से है। इस प्रकार संस्कृति एवं सभ्यता सदा एक दूसरे से अपृथक रहे हैं और एक दूसरे के ऊपर निर्भर भी रहे हैं। संस्कृति के प्रयोगात्मक पक्ष को ही सभ्यता कहा जाता है। सभ्यता संस्कृति की वाहक है, सहगामिनी भी है।

समाजशास्त्री वैज्ञानिकों के मतानुसार संस्कृति , मानवीय उद्देश्यों की समष्टि है और सभ्यता मानवीय साधनों की समष्टि। मूल अर्थ में संस्कृति मानव के आन्तरिक गुणों की द्योतक है और सभ्यता से मानव के बाह्य निर्माण कार्य का बोध होता है।

संस्कृति का अधिक विकसित एवं जटिल रूप है सभ्यता। तो सभ्यता का आन्तरिक प्रभाव है संस्कृति। समाज की बाहरी अवस्थाओं का नाम है, सभ्यता। पर संस्कृति व्यक्ति के अन्तर का विकास है।

9. संस्कृति और सभ्यता के महत्व पर प्रकाश डालिए।

सभ्यता और संस्कृति समाज और देश के लिए महत्वपूर्ण है। सभ्यता हमारे पास होती है तथा संस्कृति हम स्वयं होते हैं। हमारी रुचि हमारी संस्कृति में आती है। सभ्यता का अर्थ भौतिक पदार्थों में है, पर संस्कृति हृदय की चीज़ है। इन दोनों में जीवन मूल्यों को मुख्य स्थान है। संस्कृति अहिंसा है और मानव को ठीक रास्ते पर चलाने वाली रोशनी भी है।

मनुष्य के आत्मिक विकास और उत्थान म संस्कृति तथा सभ्यता का बडा स्थान है। संक्षेप म कहा जाय तो सभ्यता बाह्य आवरण है और संस्कृति आन्तरिक । द्रुतगति म मानव के जीवन को नये रास्ते म बदलाने म संस्कृति और सभ्यता का महत्वपूण स्थान है।

10.वैदिक संस्कृति से क्या तात्पय है?

सृष्टि के प्रारंभ म ही ईश्वर ने मानव के पथ-प्रदशन हेतु ,जिससे कि वे श्रेष्ठ मानव बन ,जीवन पद्धति संबन्धी आवश्यक सिद्धांत वेदों के माध्यम से प्रदान किये थे। इन सिद्धांतों के ही आधार पर आदि संस्कृति अथवा वैदिक संस्कृति ने रूप धारण किया जो प्राचीनतम संस्कृति है।

11.भावनात्मक संस्कृति के आधारभूत तत्वों का नाम लिखिए।

भावना ,आत्मा,एवं परमात्मा।

12. भारतीय परंपरा के अनुसार संस्कृति के कितने अवयव है और ये क्या क्या ह?

पाँच। धम,दशन, इतिहास, वण,और संस्कार।

13.संस्कृति शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई?

कृ धातु के पूव सम उपसग तथा बाद म क्तिन प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुई। संस्कार शब्द से ही संस्कृति शब्द की उत्पत्ति हुई है।

2.युवाओं से- स्वामी विवेकानन्द

Short & Paragraph questions & answers

1.स्वामी विवेकानन्द क्यों कहते ह कि युवा लोगों को आगे आना चाहिए?

युवा लोगों को आगे आना चाहिए। अगर युवा लोग आगे नहीं आए तो सच म भारत मर जाएगा। सारे सदाचारपूण आदश जीवन का विनाश हो जाएगा। धर्मों के प्रति सारी मधुर सहानुभूति नष्ट हो जाएगी। सारी भावुकता का लोप हो जाएगा और उसके स्थान पर कामरूपी देव और विलासिता रूपी देवी राज्य करेगी। धन उनका पुरोहित होगा। लोग लालच म आकर कुछ भी करने को तैयार होगा। अन्त म मानवता इन सब की बलिसामग्री हो जाएगी।

2.त्याग और सेवा किस प्रकार भारत के राष्ट्रीय आदश बन जाते ह?

त्याग और सेवा भारत के रष्ट्रीय आदश ह। इन धाराओं म तीव्रता उत्पन्न करने से शेष सब अपने आप ठीक हो जाते ह। हम सब को काम म लग जाना चाहिए। इस प्रकार ताकत अपने आप आ जाएँगे। हम दूसरों के लिए जीना चाहिए। दूसरों के लिए रत्ती-भर सोचने, काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है। इससे धीरे धीरे हृदय म सिंह का सा बल आ जाता है। विवेकानन्द कहते ह- "यदि तुम लोग दूसरों के लिए परिश्रम करके मर भी जाओ तो भी यह देखकर मुझे प्रसन्नता ही होगी।" इस प्रकार हम हर मोड पर त्याग और सेवा को हमारे आदश बनाना होगा।

3.स्वामी विवेकानन्द की राय म बारत वष का पुनरुत्थान किस प्रकार होना चाहिए ?

स्वाम विवेकानन्द कहते ह कि भारत वष का पुनरुत्थान हमारे युवाओं से शुरू होगा। शारीरिक- शक्ति से नहीं बल्कि आत्मा की शक्ति के द्वारा। हम विनाश की ध्वजा को नहीं लेना चाहिए। शांति और प्रेम को अपनाना चाहिए।

4.कैसे मुनष्य बुद्ध बन जाते ह?

जो पूणतया निःस्वार्थी है,जिसे न तो धन की लालसा है, न कीर्ति की, और न किसी अन्य वस्तु की ही केवल वही व्यक्ति सबकी अपेक्षा उत्तम रूप से काय करता है, और मनुष्य जब ऐसा करने म समथ हो जाएगा, तो वह बुद्ध बन जाएगा।

5.पूरे भारत को और संसार को हम कैसे जगा सकते ह? इसके लिए हम क्या करना चाहिए?

विवेकानन्द कहते है कि हम मरते दम तक गरीबों और पददलितों केलिए जीना होगा। सहानुभूति को हम आदश वाक्य बनाना चाहिए। ईश्वर के प्रति आस्था रखकर आगे बढ़ना चाहिए। बिना चालबाज़ी से दुःखियों के दद को समझना चाहिए। भारत के नवयुवकों को प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि अपना सारा जीवन भारत के इन

तीस करोड लोगों के उद्धार काय म लगा दगे। किसी वस्तु से डरना नहीं चाहिए। न किसी बात पर रुकना भी चाहिए।इस प्रकार हम सिंह तुल्य होकर भारत को और पूरे संसार को जगा सकते ह।

6. जाति के बारे म विवेकानन्द जी ने क्या कहा है?

जाति तो व्यक्तियों का केवल समष्टि ह। जाति के नाम पर भेद-भाव दिखाना उचित काय नहीं है। शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को उपयुक्त बनाना ही इसका सुझाव है। अपनी चिन्ता हम स्वयं ही करनी है। दुनिया तभी पवित्र और अच्छी हो सकती है, जब हम स्वयं पवित्र और अच्छे हो। इसलिए हम अपने आप को पवित्र बनाना चाहिए। यही बात हम पूणता देती है।

7.जीवन म इच्छा शक्ति का महत्व क्या है?

दुनिया के उत्थान के लिए केवल मनुष्यों की आवश्यकता है। साधारण मनुष्य नहीं बल्कि वीयवान, तेजस्वी, श्रद्धासंपन्न और अन्त तक कपट रहित नवयुवकों की। इसप्रकार के सौ नवयुवकों से संसार के सभी भाव बदल दिये जा सकते ह। यहाण सब चीज़ों की अपेक्षा इच्छा शक्ति का अधिक प्रभाव है। इच्छाशक्ति के सामने और सब शक्तियाँ दब जाएँगे, क्यों कि इच्छाशक्ति साक्षात् ईश्वर से निकलकर आती है। विशुद्ध और दृढ़ इच्छाशक्ति सवशक्तिमान है।

इसप्रकार इच्छाशक्ति को लेकर हमारे नवयुवकों को संगठित होना चाहिए। भारत देश के उत्थान के लिए यही एक रास्ता है।

8.स्वामी विवेकानन्द जी ने स्वदेश-भक्ति के बारे म क्या कहा है ?

स्वामी विवेकानन्द स्वदेश-भक्ति म विश्वास करते ह। इस विषय म उनका एक आदश है। बडे काम करने केलिए तीन चीज़ों की आवश्यकता होती है। बुद्धि और विचारशक्ति हम लोगों की थोडी सहायता कर सकती है। वह हम को थोडी दूर अग्रसर करा देती है और वहीं ठहर जाती है। किन्तु हृदयके द्वारा ही महाशक्ति की प्रेरणा होती है। प्रेम असंभव को संभव कर देता है। जगत् के सारे रहस्यों का द्वार प्रेम ही है। तो हम सहृदय बनना चाहिए। सहृदयता से कुछ भी हासिल कर सकते ह।

स्वामी विवेकानन्द कहते है कि वे धार्मिक महासभा के लिए अमेरिका नहीं गए थे। देश के जनसाधारण की दुदशा के प्रतिकार करने केलिए गए थे। अनेक वष तक वे समग्र भारत म घूमते रहे पर अपने स्वदेशवासियों केलिए काय करने का कोई अवसर नहीं मिला। इसलिए वे अमेरिका गए।

9.संसार को 'निर्भीकता' की शिक्षा क्यों देनी चाहिए?

यह एक बडी सच्चाई है- शक्ति ही जीवन और कमज़ोरी ही मृत्यू है। हम जीवन म निभयता को अपनाना होगा। यह बात सच है कि संसार को यदि एक धम की शिक्षा देनी चाहिए ,तो वह है- निर्भीकता । इस आध्यात्मिक जगत म भय ही पतन और पाप का कारण है। भय से ही दुख होता है, यह मृत्यू का कारण है तथा

इसी के कारण सारी बुराई तथा पाप होता है। सबसे पहले हमारे तरुणों को मज़बूत बनाना चाहिए। धम इसके बाद की वस्तु है। इसप्रकार हम अपने तन और मन दोनों को मज़बूत बनाकर निभय रहना चाहिए।

10.स्वामी विवेकानन्द की राय म हम ब्रह्म स्वरूप को कैसे अभिव्यक्त कर सकते ह?

कम,भक्ति,योग या ज्ञान के द्वारा, इनम से किसी एक के द्वारा, या एक से अधिक के द्वारा या सब के सम्मिलन के द्वारा ब्रह्म स्वरूप को अभिव्यक्त कर सकते ह।

11.संसार को हम कैसे अपने पैरों के नीचे लाये जा सकते है? इसके लिए किन किन कार्यों की पूर्ति चाहिए?

हर नवयुवकों को अपने जीवन म एक लक्ष्य होना चाहिए। हम सभी धर्मों को स्वीकार करना चाहिए। सब एक है, इस दृष्टि से दुनिया को देखना ही हमारा कतव्य है। यहाँ शिक्षा का स्थान भी महत्वपूण है। हम शिक्षा के दौरान विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है। यह जीवन निमाण, मनुष्य निमाण, तथा चरित्र निमाण म सहायक है। अपने भाइयों का नेतृत्व नहीं बल्कि सेवा करने का प्रयत्न हम करना है। साथ ही हमारे स्वभाव म संगठन को लाना ज़रूरी है। हमेशा जीवन म समझौता करने का प्रयास करना चाहिए। यही है संगठन का पूरा रहस्य। हम सदा के लिए आत्मप्रतिष्ठा, दलबन्दी, और ईष्या को छोड देना चाहिए। हम पृथ्वी माता की तरह सहनशशील होना चाहिए। इस प्रकार हम चाह तो संसार को बहुत आगे ले जा सकते ह। यह कतव्य हमारे युवाओं पर निभर है।

12. भारत के राष्ट्रीय आदश --------- है।

त्याग और सेवा।

13.आध्यात्मिक जगत म 'भय' को पतन तथा पाप का कारण क्यों कहते है?

आध्यात्मिक जगत अथवा ऐहिक जगत म भय ही पतन या पाप का कारण है। भय से ही दु:ख होता है, यह मृत्यू का कारण है तथा इसी के कारण सारी बुराई तथा पाप होता है।

14.संगठन का पूरा रहस्य क्या है?

दूसरों के मत से सहमत होने को तैयार रहना और हमेशा समझौता का प्रयास करना । यही संगठन का पूरा रहस्य है।

3. भारत एक है-डॉ.रामधारी सिंह दिनकर-

बडी बाधा है। राष्ट्रीय एकता की स्थापना म अब प्राकृतिक बाधाएँ नहीं रहती। भाषा भेद की समस्या का हल

1.भारत म दिखाई पडने वाली विविधताओं पर प्रकाश डालिए।

श्री रामधारीसिंह दिनकर आधुनिक हिन्दी के बहुमुखी कला के प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। तो भी वे मुल रूप से कवि ह। कविता हो या निबन्ध अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और आदर प्रकट करने का माध्यम बनाये ह। भारत एक है- उनका ऐसा एक निबन्ध है। इसम उन्होंने भारतवष की विविधता पर प्रकाश डालते हुए इस विविधता के भीतर छिपी हुई उसकी एकता का परिचय दिया है। उनका कहना है कि भारतवष की एकता जितनी प्रकट है, उसकी विविधताएँ भी उतनी प्रत्यक्ष है।

पहले वे भारत की विविधता के बारे म बताते ह। भारतवष की विविधता पहले यहाँ के प्राकृतिक ढ़ाँचे म दिखाई पडती है। यहाँ का भूभाग प्राकृतिक दृष्टि से बिलकुल भिन्न है। इसे तीन भागों म बाँट सकते ह। पहला भाग है-हिमालय से विंध्याचल तक फैला हुआ उत्तरी भाग। दूसरा विन्ध्या से लेकर कृष्णा नदी तक का दक्खिनी प्लेटो। तीसरा भाग है कृष्णा से लेकर कुमारी अन्तरीप तक का जो प्रायद्वीप जैसा है। इसप्रकार प्रकृति ने भारत के तीन खंड किये ह और ये तीन खंड भारत के इतिहास के तीन क्रीडा स्थल रहे ह।

भारत की प्राकृतिक विविधता के कारण प्राचीन काल और मध्य काल म उत्तर और दक्षिण को एक शासन के अधीन म लाने म सफलता पयाप्त नहीं मिली है। फिर भी रामायण काल और महाभारत काल म उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच एकता विद्यमान थी और दोनों भागों के लोग परस्पर मिलते-जुलते थे।

यह देश बडा विशाल है। यहाँ बडे बडे पहाड और बडी बडी नदियाँ ह। इन पहाडों और नदियों के कारण देश म अलग अलग क्षेत्र बने हुए है। इन क्षेत्रों के भीतर रहनेवाले लोगों के भीतर एक तरह की प्रांतीयता और क्षेत्रीय जोश जन्म लेता है। इन प्रांतीयता और क्षेत्रीय जोश के कारण देश म वैर-फूट का भाव प्रबल रहा है।

यहाँ की जलवायु म भी भिन्नता है। काश्मीर की जलवायु मध्य एशिया की जलवायु के समान है। पूरब म चिरापुंजी है जहाँ अधिक वषा होती है। थार की मरुभूमि पश्चिम म फैली हुई है।

जलवायु और क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार लोगों के खान-पान और वेश-भूषा म भी अन्तर पाया जाता है। इस भिन्नता को दूर करना मुश्किल है।

भारत म फैली हुई भिन्न-भिन्न भाषाएँ विविधता का सब से बडा लक्षण है। भाषाओं की विविधता के कारण हम आपस म अजनबी के समान हो जाते ह। भाषा-भेद की समस्या देश की राष्ट्रीय एकता की सबसे करने केलिए दिनकर जी का सुझाव है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों म अहिन्दी भाषाओं तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों म हिन्दी भाषा का प्रचार हो जाए।

2.भारत की विविधता म छिपी हुई एकता पर प्रकाश डालिए।

प्राकृतिक भूभाग, जलवायु, खान-पान, वेश-भूषा और भाषा का दृष्टि यहाँ भिन्नता है। इस विविधता के भीतर यहाँ एकता छिपी हुई है। देश का भिन्न भिन्न भाषाओं के भीतर बहनेवाला भाव-धारा एक है। रामायण और महाभारत को लेकर भारत के प्राय: सभी भाषाओं के बीच म एकता मिलेगी। संस्कृत और प्राकृत का अन्य रचनाओं का प्रभाव भी विभिन्न भाषाओं के साहित्य पर पडा है। दिनकर जी का कहना है कि भारतीय जनता का एकता का असला आधार भारतीय दशन और साहित्य है। भारत का भाषाओं का लिपियां म भिन्नता रहने पर भी उदु को छोडकर अन्य सभी लिपियां का वणमाला एक हा है।

यहाँ धामिक और सांस्कृतिक एकता भी विद्यमान है। उदाहरण केलिए उत्तर और दक्षिण म एक हा संस्कृति के मन्दिर दिखाई पडते है। उत्तर और दक्षिण के लोगां के जीवन-दशन म भी भिन्नता नहां। वे एक धम के अनुयायी और एक संस्कृति के भागीदार है।

संस्कृति का दृष्टि से यहाँ के मुसलमान हिन्दुओं के बहुत कराब है। भारत के मुसलमानां के भीतर भी हिन्दुओं के जैसे हा धम को लेकर एक तरह का आपसी एकता है।

प्रत्येक देश का एक निजी सांस्कृतिक विशेषता होती है। यह विशेषता प्रत्येक देशवासी का चाल-ढाल, बातचीत, रहन-सहन,खान-पान, तौर-तराके और आदतां से प्रकट होती रहती है। भारत का सांस्कृतिक एकता का यह प्रमाण है कि कोई भी भारतवासी चाहे वह हिन्दु हो, फारसी हो या मुसलमान अन्य देश के लोगां के बीच म खप नहां सकता। वह भारतवासी हा बना रहता है। उसे आसानी से पहचाना जा सकता है।

यह सांस्कृतिक एकता भारत को एक रखे हुए है। भिन्न भिन्न धमवाले और भाषा भाषी होने पर भी रहन-सहन और आचार-विचार और दशन पर आधारित सांस्कृतिक एकता के कारण हम मान सकते ह कि भारत एक है। उसका विविधता म एकता मौजूद है।

Module-2.

4.लोकतन्त्र एक धम है- डॉ. सवप्पल्ला राधाकृष्णन

1.लोकतन्त्र एक धम है नामक निबन्ध म डॉ.राधाकृष्णन जी का मन्तव्य व्यक्त काजिए ।

डॉ.सवपल्ला राधाकृष्णन का जन्म सितम्बर 1888 को हुआ। राधाकृष्णन जी एक श्रेष्ठ दार्शानक एवं राजनीतिज्ञ थे। चिरकाल तक देश-विदेश म प्रोफेसर रहे, बाद म विदेशा म राजदूत के रूप म कायरत रहे। आप भारत के उपराष्ट्रपात और राष्ट्रपात रह चुके है । डॉ राधाकृष्णन ने भारतीय दशन का देश-विदेश म प्रचार किया और उसका व्यावहारिकता पर विशेष ज़ोर दिया। भारतीय संस्कृात का वास्तविक स्वरूप उन्हाने विश्व के सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। ‘लोकतन्त्र एक धम है’ निबन्ध डॉ.राधाकृष्णन का पुस्तक ‘भारतीय संस्कृात: कुछ विचार’ म संकालत है, जिसम लोकतन्त्र के विविध पहलुओं पर विचार व्यक्त है।

1947 म राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत को शासन केलिए बहुत सारा बाता का आवश्यकता पडी। आत्मत्यागी नेतृत्व, ईमानदार तथा कुशल नागारक सेवा, अनुशासित सेना तथा पुलिस दल , विशेषज्ञ, औद्योगिक प्रबन्धका, कुशल श्रमिका और कृषि-ज्ञान रखनेवाले किसाना का ज़रूरत पडी। देश भक्ति का शक्तिमती भावना कायम रहने के कारण एक हद तक इस महान देश का होने का भावना और उसके होने का अभिमान का बोध जन मानस म जगा सका । बीच बीच म अधोगतिया एवं अन्ध-गलिया म गिरने के बावजूद लगभग चालास या पचास शतिया तक यह देश जिन महती परंपराओं के लिए खडा रहा है, उन्ह अपने अन्दर विकसित करने का आवश्यकता है।

लोकसत्ता के विभिन्न पहलू होते ह। यह राजनीतिक व्यवस्था है, यह एक आथिक रास्ता है, यह जीवन का एक नैतिक प्रणाला है। राजनीतिक व्यवस्था म हमने वयस्क मताधिकार को ग्रहण किया है। प्रत्येक व्यक्ति को जो एक विशेष आयु का हो, फिर उनका शैक्षणिक योग्यताएँ, सुविधाएँ, सम्पत्ति कुछ भी हो , मताधिकार प्राप्त है।प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा का एक चिनगारा है। आज राजनीतिक लोकतन्त्र वग, प्रजाति एवं धम के भेद-भाव को लाँघ जाता है। प्रत्येक मानव-प्राणी सर्वाच्च जीवन के लिए शक्तिमान उम्मीदवार है। राधाकृष्णन जी का आह्वान है कि हम सब व्यक्तिया को पूण, स्वतंत्र एवं समृद्ध जीवन जीने का अवसर देना चाहिए। निम्नतम सांस्कृतिक एवं आथिक परिस्थितियाँ पैदा कर जाने केलिए हा हमारे विधान म सावदेशिक शिक्षा का लक्ष्य रखा गया है। हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिका के आक्रमणा तथा जीवन के यन्त्रीकरण द्वारा मानवीय प्राणिया के व्यक्तित्व को कुचले जाने या कम किए जाने का भी मौका नहा देना चाहिए।

समाज वाद का अथ सब केलिए समान अवसर पर सुविधाएँ देना है। जब हम कहते ह कि सब मनुष्या को भोजन, वस्त्र एवं आश्रय का सुविधा मिलनी चाहिए तब हम लोकतांत्रिक आदश के आथिक पक्ष पर ज़ोर देते है। कोई भी मुनष्य ,जो अपने देश के प्रात भावना रखता है; तब तक सुखी या संतुष्ट नहा हो सकता जब तक वह इस भयानक दुदशा और गराबी को देख रहा है।

अब भी लोकतन्त्र एक आदश ही बना हुआ है। हम उसम कुछ सामाजिक और आथिक सामग्री डालने की चेष्टा करते ह तो यह लोकतन्त्र का आथिक पक्ष बन जाता है। आथिक लोकतन्त्र की उपलब्धि केलिए हम अपनी राष्ट्रीय संपत्ति , अपनी कृषि संबन्धी उपज और औद्योगिक उत्पान बढ़ाना चाहिए। पंचवर्षीय योजनाएँ इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए है। सामूहिक विकास कायक्रम ग्राम्य पुनरचना के उद्देश्य को लेकर चल रहे ह।

नैतिक पकड या नैतिक वृत्ति पर प्रकाश डाला जाय तो पता चलेगाकि प्रत्येक मानव प्राणी म विवेक का अंश है। हम यह विश्वास रखना चाहिए कि हम सदा ही ठीक नहीं हो सकते। कभी हमारे विरोधी भी ठीक हो सकते ह। हमारे विरोधियों म भी कुछ गुण हो सकते है। यही भावना लोकतन्त्र हम पर लागू करता है। हम अपनी समस्याय विवेक के साथ बिना कटुता के हल करने की चेष्टा करनी चाहिए।

जब हम देखते ह कि मानवता के भविष्य को प्रभावित करनेवाली विशाल समस्याओं के आमने-सामने खडे है: तब हमारे लिए इतना जानना ज़रूरी है कि काल सबसे बडा व्याधिहता है। यदि हम मानवीय स्वभाव की लोच म समय की व्याधि शमनकारी शक्ति म सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं की परिवतनीयता म और सबके ऊपर सवसाधारण की सदिच्छा म विश्वास हो तो जो समस्याय आज हमको इतनी भयावह रीति से विभजित कर रही है, वे ही कुछ समय बाद विशुद्ध सैद्धांतिक या शास्त्रीय प्रतीत होने लगगे।

राधाकृष्णन जी के अनुसार हमारा राष्ट्र एक है और अखण्डनीय है। इसीलिए अपने गौरव के दिनों म हम विभिन्न धर्मों के बीच सहिष्णुता और समझदारी से काम ले सके थे। यदि आज हम उन शिक्षाओं को भूल जाते ह और अपनी वर्गीय निष्ठाओं को बढ़ाते-चढ़ाते ह तो निश्चय ही भविष्य अंधकारमय है।

लोकतन्त्र एक राजनीतिक व्यवस्था है जो लोगों को समान मानती है। यह एक आथिक माँग है जो इस देश और इस दुनिया के सवसामान्य लोगों की अभिमान का बोध जन मानस म जगा सकी । बीच बीच म अधोगतियों एवं अन्ध-गलियों म गिरने के बावजूद लगभग चालीस या पचास शतियों तक यह देश जिन महती परंपराओं के लिए खडा रहा है, उन्ह अपने अन्दर विकसित करने की आवश्यकता है।

2. लोकसत्ता के विभिन्न पहलू कौन कौन से है?

लोकसत्ता के विभिन्न पहलू होते ह। यह राजनीतिक व्यवस्था है, यह एक आथिक रास्ता है, यह जीवन की एक नैतिक प्रणाली है। राजनीतिक व्यवस्था म हमने वयस्क मताधिकार को ग्रहण किया है। प्रत्येक व्यक्ति को जो एक विशेष आयु का हो, फिर उनकी शैक्षणिक योग्यताएँ, सुविधाएँ, सम्पत्ति कुछ भी हो , मताधिकार प्राप्त है।प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा की एक चिनगारी है। आज राजनीतिक लोकतन्त्र वग, प्रजाति एवं धम के भेद-भाव को लाँघ जाता है। प्रत्येक मानव-प्राणी सर्वोच्च जीवन के लिए शक्तिमान उम्मीदवार है।

राधाकृष्णन जी का आह्वान है कि हम सब व्यक्तियों को पूण, स्वतंत्र एवं समृद्ध जीवन जीने का अवसर देना चाहिए। निम्नतम सांस्कृतिक एवं आथिक परिस्थितियाँ पैदा कर जाने केलिए ही हमारे विधान म

सावर्देशिक शिक्षा का लक्ष्य रखा गया है। हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के आक्रमणों तथा जीवन के यन्त्रीकरण द्वारा मानवीय प्राणियों के व्यक्तित्व को कुचले जाने या कम किए जाने का भी मौका नहीं देना चाहिए।

समाज वाद का अथ सब केलिए समान अवसर पर सुविधाएँ देना है। जब हम कहते ह कि सब मनुष्यों को भोजन, वस्त्र एवं आश्रय की सुविधा मिलनी चाहिए तब हम लोकतांत्रिक आदश के आथिक पक्ष पर ज़ोर देते है। कोई भी मुनष्य ,जो अपने देश के प्रति भावना रखता है; तब तक सुखी या संतुष्ट नहीं हो सकता जब तक वह इस भयानक दुदशा और गरीबी को देख रहा है।

अब भी लोकतन्त्र एक आदश ही बना हुआ है। हम उसम कुछ सामाजिक और आथिक सामग्री डालने की चेष्टा करते ह तो यह लोकतन्त्र का आथिक पक्ष बन जाता है। आथिक लोकतन्त्र की उपलब्धि केलिए हम अपनी राष्ट्रीय संपत्ति , अपनी कृषि संबन्धी उपज और औद्योगिक उत्पान बढ़ाना चाहिए। पंचवर्षीय योजनाएँ इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए है। सामूहिक विकास कायक्रम ग्राम्य पुनरचना के उद्देश्य को लेकर चल रहे ह।

नैतिक पकड या नैतिक वृत्ति पर प्रकाश डाला जाय तो पता चलेगाकि प्रत्येक मानव प्राणी म विवेक का अंश है। हम यह विश्वास रखना चाहिए कि हम सदा ही ठीक नहीं हो सकते। कभी हमारे विरोधी भी ठीक हो सकते ह। हमारे विरोधियों म भी कुछ गुण हो सकते है। यही भावना लोकतन्त्र हम पर लागू करता है। हम अपनी समस्याय विवेक के साथ बिना कटुता के हल करने की चेष्टा करनी चाहिए।

3.लोकतन्त्र से क्या तात्पय है?

लोकतन्त्र एक राजनीतिक व्यवस्था है जो लोगों को समान मानती है। यह एक आथिक माँग है जो इस देश और इस दुनिया के सवसामान्य लोगों की आथिक दशा कोऊपर उठाने की माँग करती है। यह जीवन की नैतिक प्रणाली है जिसम दूसरों के प्रति मित्रता व्यवहार करने की आशा हमसे की जाती है।

5.संस्कृति और अपसंस्कृति -किशन पटनायक

1.संस्कृति और अपसंस्कृति नामक लेख म संस्कृति के कौन से पहलू को उजागर किया है?

समाजवादी आन्दोलन के पूर्वकालिक कार्यकर्ता के रूप म सक्रिय किशन पटनायक 32 वष की आयु म 1962 म संबलपुर से लोकसभा के सदस्य चुने गये। साहित्य और दशन म दिलचस्पी रखनेवाले किशन पटनायक हिन्दी, अंग्रेज़ी और उडिया म लिखते रहते ह। अंग्रेज़ी और हिन्दी के प्रमुख पत्रिकाएँ जैसे कल्पना, धमयुग आदि म उनके बहुत से लेख प्रकाशित है।

संस्कृति और अपसंस्कृति नामक लेख म भूमण्डलीकरण से जीवन के तमाम क्षेत्रों म आए बदलाव को ,खास करके सांस्कृतिक परिवतन को रेखांकित किया गया है। लेखक की राय म इसे परिवतन न कहकर अपसंस्कृति कहना उचित होगा। मनुष्य की श्रेष्ठता दशाने केलिए अक्सर मनुष्येतर जीव जगत से उसकी तुलना की जाती है। मनुष्य के जीवन को पशुओं के जीवन से बेहत्तर माना गया है। संस्कृति ही इसका कारण है। मनुष्य अपना हर एक काम- जन्म,मृत्यू, भोजन, यौन-संपक सब कुछ अपनी बनाई हुई एक संस्कृति के तहत करना चाहता है। मनुष्य अपने को केवल समाज के साथ जोडकर नहीं सोचता है, वह अपने को सचेत ढ़ंग से पूरे ब्रह्माण्ड के साथ जोडकर देखना चाहता है। मनुष्य सीधे प्रकृति के नियमों से निर्देशित होकर नहीं चलता। उसके अपने नीति-नियम होते ह। उसकी यह स्वायत्तता उसकी संस्कृति है।

संस्कृति म बहुत सा आडंबर भी होता है। उसकी बुनियादी अंश को मबल्य कहते ह। जीवन को स्वस्थ, सुन्दर और गतिशील बनाने के जो तत्व होते ह उनको मूल्य माना गया है। मूल्यों के बहुत सारे सामाजिक और व्यावहारिक रूप हो सकते ह, लेकिन वास्तव म ये तीन मूल्य ह। बाह्य स्थिति के साथ सम्यक संयोग स्थापित करनेवाला तत्व सौन्दय है। देह और मन के अन्तर कोई अवरोध न रहना स्वास्थ्य है। तीसरा मूल्य है गतिशीलता, जो मुनष्य की आगे बढ़ने की इच्छा है, यह शारीरिक, मानसिक, आन्तरिक,बाह्य कई स्तरों पर सक्रिय होती है। मनुष्य का जो व्यवहार जीवन-विकास की धारा का मददगार है वह वह मूल्य है, वही सुन्दर और नैतिक है।

आदिम काल से ही मनुष्य अपनी संस्कृति बनाने म लगा हुआ है। अलग-अलग भौगोलिक स्थितियों म अलग-अलग संस्कृतियाँ बनी ह, उनका विकास हुआ है और पतन भी। संस्कृतियों म भिन्नता रखते हुए भी ये मनुष्य जीवन को तथा सामूहिक जीवन को सुन्दर, स्वस्थ, और गतिशील बनाने की कोशिश ह। संस्कृतियों के उत्थान और पतन के अलग- अलग चरण पाई जाती है। किसी समुदाय के अन्दर नेतृत्व करनेवाला समूह जब अपने समूह या वग को ज़्यादा मज़बूत या विशिष्ट बनाने के लिए मयादाओं को या संतुलन को भंग करता है तब संस्कृति का ढाँचा बदल जाता है। इसी तरह दुनिया म सैकडों संस्कृतियाँ विभिन्न अवस्थाओं म पाई जाती ह।

आधुनिक युग म विभिन्न संस्कृतियों म जो परिवतन हुए है, उनम सबसे प्रमुख है—पश्चिम की आधुनिकता के दबाव से गैर पश्चिमी समाजों का परिवतन। पश्चिम के समाज और संस्कृति पर आधुनिक

विज्ञान का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से पडा। लेकिन भारतीय समाज पर पश्चिम की आधुनिक सभ्यता और संस्कृति का दबाव पडा। चीन तथा जापान पर पश्चिमी संस्कृति का दबाव कम रहा क्योंकि वे पराधीन नहीं थे। इसका स्पष्ट उदाहरण भाषा के क्षेत्र म है। जापान और चीन म आधुनिकीकरण की भाषा उनकी अपनी भाषा रही। भारत,पाकिस्तान और बंगलादेश ने एक यूरोपीय भाषा को ही अपने आधुनिकीकरण की भाषा के रूप म अपनाया।

संस्कृति म विकृतियाँ दो तरह से आ सकती है: समाज के अन्दर किसी समूह के आधिपत्य के द्वारा सांस्कृतिक संतुलन पर आक्रामक दबाव से या बाह्य समाज के आधिपत्य से। पश्चिम के आधिपत्य से पहले ही भारत म संस्कृति म विकृतियाँ आने लगी थी। भारत की संस्कृतियों के सम्यक व स्वतंत्र विकास की धारा रुक गई थी। समाज के अन्दर ब्राह्मणवाद का आधिपत्य सबसे बडा दबाव था। इससे भारत का सांस्कृतिक बल इतना टूट गया कि मुसलमानों के काल म जो बाहर का आक्रमण हुआ उसका मुकाबला भारतीय समाज नहीं कर सका।

दो संस्कृतियों के मिश्रण से एक नई धारा उत्पन्न होने की प्रक्रिया म जीवन को सुन्दर, स्वस्थ और गतिशील बनाने के संस्कृति के तीन मूल तत्व सुरक्षित रहते है, तब मिश्रण से एक नई और सुसंस्कृति पैदा होती है। जो स्वस्थ है वह स्थूलहो जाता है जो गतिशील है वह आक्रामक और डरावना हो जाता है।

नैतिकता और संस्कृति के साथ मनुष्य के मन का संबन्ध है। बुद्धि से मनुष्य सक्रिय होता है, लेकिन समग्र क्रिया का प्रतिफलन मन पर होता है। सुख-दुख को कैसे ग्रहण कर, कैसे झेल, कैसे नियंत्रित कर या पैदा कर, ये सारी बात संस्कृति से संबन्धित है। सभ्यता और संस्कृति मनुष्य की दुख शमन की प्रवृत्ति का परिणाम है, लेकिन जब वह प्रकृति और मनुष्य सम्यक संबन्ध छिन्न करके उनको सुख के साधन के तौर पर व्यवहार करता है और मनुष्य समाज म आधिपत्य का केन्द्र स्थापित करता है।

जो लोग संस्कृति की समीक्षा करते ह, अपसंस्कृति पर बहस करते ह या नई संस्कृति का उदय चाहते है, उन्ह मानव के उपयुक्त आचरणों और संबन्धों के बारे म मूल्य निरूपित करने होंगे। संस्कृति की समझ को अगर हम इस समग्र रूप म ल तो केवल नाटक,साहित्य या धम, संस्कृति के उपदान नहीं है बल्कि आथिक और राजनैतिक संस्थाएँ, शिक्षा और व्यापार की प्रणालियाँ- ये सब संस्कृति के उपदान है।

इस वक्त की अपसंस्कृति की चचाके अन्दर नई आथिक नीतियों और ग्लोबीकरण की अथनीति की चचा बार बार आ जाती है। नई आथिक नीति का प्रश्न सांस्कृतिक प्रश्न नहीं है,लेकिन संस्कृतिका भविष्य ग्लोबीकरण की नीतियों के द्वारा तेज़ी से प्रभावित हो रहा है क्योंकि नई आथिक नीतियाँ वस्तुजगत से मनुष्य के संबन्धों के, मनुष्य के यौन संबन्धों को तथा अन्य बुनियादी मानवीय संबन्धों को कुछ खास दिशाओं म ले जाना चाहती है।

विश्व के पैमाने पर मनुष्य को आपस म जोडना मानव जाति का प्राचीन लक्ष्य है। संस्कृति और धम को ही इसके माध्यम के रूप म माना गया है। आधुनिक युग का शासक वग दावा करता है कि वह व्यापारिक

संस्थाओं के द्वारा समग्र मानव जाति को एकीकृत कर देगा। पर वास्तव में व्यापार के द्वारा नहीं ,संस्कृति के विकास के द्वारा ही मनुष्य का जगतीकरण होगा।

Paragraph questions & answers.

1.मूल्य किसे कहते हैं और उसके बुनियादी तत्व कौन कौन से है?

संस्कृति में बहुत सा आडंबर भी होता है। उसकी बुनियादी अंश को मबल्य कहते हैं। जीवन को स्वस्थ, सुन्दर और गतिशील बनाने के जो तत्व होते हैं उनको मूल्य माना गया है। मूल्यों के बहुत सारे सामाजिक और व्यावहारिक रूप हो सकते हैं, लेकिन वास्तव में ये तीन मूल्य हैं। बाह्य स्थिति के साथ सम्यक संयोग स्थापित करनेवाला तत्व सौन्दय है। देह और मन के अन्तर कोई अवरोध न रहना स्वास्थ्य है। तीसरा मूल्य है गतिशीलता, जो मुनष्य की आगे बढ़ने की इच्छा है, यह शारीरिक, मानसिक, आन्तरिक,बाह्य कई स्तरों पर सक्रिय होती है। मनुष्य का जो व्यवहार जीवन-विकास की धारा का मददगार है वह वह मूल्य है, वही सुन्दर और नैतिक है।

2.आधुनिक युग की सांस्कृतिक परिवतनों का प्रमुख कारण क्या है?

आधुनिक युग में विभिन्न संस्कृतियों में जो परिवतन हुए है, उनमें सबसे प्रमुख है—पश्चिम की आधुनिकता के दबाव से गैर पश्चिमी समाजों का परिवतन। पश्चिम के समाज और संस्कृति पर आधुनिक विज्ञान का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से पडा। लेकिन भारतीय समाज पर पश्चिम की आधुनिक सभ्यता और संस्कृति का दबाव पडा। चीन तथा जापान पर पश्चिमी संस्कृति का दबाव कम रहा क्योंकि वे पराधीन नहीं थे। इसका स्पष्ट उदाहरण भाषा के क्षेत्र में है। जापान और चीन में आधुनिकीकरण की भाषा उनकी अपनी भाषा रही। भारत,पाकिस्तान और बंगलादेश ने एक यूरोपीय भाषा को ही अपने आधुनिकीकरण की भाषा के रूप में अपनाया।

3.संस्कृति में विकृतियाँ किस तरह आ जाती है?

संस्कृति में विकृतियाँ दो तरह से आ सकती है: समाज के अन्दर किसी समूह के आधिपत्य के द्वारा सांस्कृतिक संतुलन पर आक्रामक दबाव से या बाह्य समाज के आधिपत्य से। पश्चिम के आधिपत्य से पहले ही भारत में संस्कृति में विकृतियाँ आने लगी थी। भारत की संस्कृतियों के सम्यक व स्वतंत्र विकास की धारा रुक गई थी। समाज के अन्दर ब्राह्मणवाद का आधिपत्य सबसे बडा दबाव था। इससे भारत का सांस्कृतिक बल इतना टूट गया कि मुसलमानों के काल में जो बाहर का आक्रमण हुआ उसका मुकाबला भारतीय समाज नहीं कर सका।

4.हमारे युग की दो चुनौतियाँ क्या क्या है?

हमारे युग का दो चुनौतियाँ ह। (क) मनुष्य का संस्कृति और सांस्कृतिक मानदण्डा को हम नए सिरे से परिभाषित कर। (ख) व्यापार और विकास का नीतियां को सांस्कृतिक लक्ष्यां के अनुरूप बनाएँ। मनुष्य-मनुष्य के बीच का विषमताओं को दुलघ्य बनाकर , देशां के बीच का विषमताओं को अलंघ्य बनाकर हम व्यापार का ग्लोबीकरण हासिल कर सकते ह, मनुष्य का जगतीकरण नहां। मनुष्य का जगतीकरण एक सांस्कृतिक लक्ष्य है।

5.सुखान्वेषण से क्या तात्पय है?

सुख-दुख के बारे म दुनिया म दो तरह का मान्यताएँ चलती ह।उनम सब से अधिक प्रचलित है वह सुखान्वेषण का है। सुख हा प्राप्य है, उसका तलाश होनी चाहिए; हालाँकि उसके साथ-साथ सुख का अलग अलग परिभाषाएँ भी बतलाई हुई है; अधिकांश धामिक दशनां म इससे मिलती जुलती बात पाई जाती है।

6. दुख के बारे म गौतम बुद्ध का राय क्या है?

गौतम बुद्ध का मानना है कि मनुष्य का मूल स्थिति दुख का है। दुख का शमन होना चाहिए। दुख शमन का विधि हा नैतिकता है। वह धम है। हम कह सकते ह दुख शमन होने से मनुष्य जिस स्थिति का ओर प्रगति करेगा वह सुख और दुख से अलग होगी, वहाँ अन्वेषण एक तीसरा चीज़ का होगा। सुखान्वेषण का परिणाम विलासिता ,स्थूलता , भद्दापन और तामसिक स्थितियां का ओर होता है; लेकिन दुख के दशन का परिणाम दारिद्र्य, आत्मसन्तोष और जडता भी हो सकता है। सुखान्वेषण के दशन पर आधारित सभ्यता-संस्कृति को तो हम देख रहे ह। शायद दुख शमन का मानवीय कोशिशां से जो एक व्यवस्था खड़ी होती है, वहा संस्कृति हो।

Module-3.

6.सामाजिक क्रांति के अग्रदूत- श्री नारायण गुरु

श्री नारायण गुरु का जन्म 1856 ई. म चेम्बषंती नामक स्थान पर हुआ था। यह तिरुवनन्तपुरम से लगभग बारह किलोमीटर का दूरा पर स्थित है। उनके पिता माडन और माता कुट्टी थी। पिता अध्यापन का काय करते थे तथा वैद्य भी करते थे।

काल का कठोर आवश्यकताएँ हा महात्माओं को जन्म देती है। श्री नारायण गुरु का जन्म भी ऐसी परिस्थिति का द्योतक है। उस समय समाज विभिन्न धर्मा, जातियां, उपजातियां और वर्गा म विभाजित था। केरल म हिन्दुओं के दो प्रमुख जातियाँ थी- नायर और ईषवा। नायर जाति को समाज म उच्च स्थान प्राप्त था और उनका संबन्ध सवण जाति के साथ था। ईषवा जाति के लोग अवण, अस्पृश्य और दलित माने जाते थे। श्री नारायण गुरु का जन्म ईषवा जाति म हुआ था। उस समय सवण से 32 फूट का दूरा पर ईषवा कोरहना पडता था और संपक म आने पर अशुद्ध घोषित कर दिया जाता था। ईषवा का जनसंख्या अधिक थी। इनका प्रधान व्यवसाय नारियल और खजूर से ताडी निकालना और कृषि था।

आयुर्वेदिक पद्धति का संपूण साहितय संस्कृत म उपलब्ध था। ईषवा जाति ने संस्कृत पढ़कर इसको अपना लिया। जन साधारण म आयुवद और संसकृत को जीवित रखने का श्रेय ईषवा जाति के वैद्यां को है। श्री नारायण गुरु का मामा संसकृतज्ञ और वैद्य थे।

गुरुजी को बचपन म 'नानू' नाम से पुकारा जाता था। बहुत शरारती था। देवां के चढावे केलिए रखे फल और मिष्ठान्न लेकर मज़े से खाता और कहता "यदि म संतुष्ट होऊँगा तो भगवान भी प्रसन्न होगा। नानू जब छह वष का था तो उनके एक चाचा का मृत्यू हुई। दूसरे दिन वह घर से निकल गया और जंगल म छिपकर सोच-विचार म व्यस्त हो गया। सभी तलाश के अन्त म किसी ने सूचना दा कि वह जंगल म है, तो मामा-मामी तुरंत जंगल गये और उन्ह घर लाया। पूछने पर यह उत्तर मिला कि –चाचा का मृत्यू पर आप सब बहुत दु:खी थे, किन्तु दूसरे दिन हा आप सब फिर सामान्य हो गए। इस घटना से स्पष्ट होता है कि वे अपनी उम्र से पहले हा दार्शनिक थे।

श्री नारायण गुरु का सुव्यवस्थित शिक्षा पाँच वष का आयु म शुरू हुई। गुरु का नाम चबषती मूत्त पिल्लै था जो सवण थे। उच्च शिक्षा केलिए उन्ह 1876 ई. म करुनागपल्ला के आश्रम म भेजा गया। वण भेद के कारण नायर बच्चे गुरु के आश्रम म हा रहते थे और ईषवा बच्चां को आश्रम के बाहर रहना पडता था। इसलिए वरनपल्ला नामक समृद्ध और उदार परिवार म रहना पडा। नानू के कुशाग्र बुद्धि के कारण गुरु उन्ह छात्रों का नेता बनाया। घनिष्ठ मित्र कुन्हु कुन्हु पणिकर था। इसी बीच नानू को पेचिश का बीमारा हो गई तो मामा उन्ह घर वापस लाए। इस प्रकार नानू का विद्यार्था जीवन समाप्त हो गया।

नानू घुमक्कड प्रकृति के थे और धम परायण जीवन व्यतीत करने के इच्छुक थे। लेकिन संबन्धियों ने समझा बुझाकर उनसे शादी करवायी। लेकिन बहुत जल्द ही वे ब्रह्मचय माग पर लौट आए। परमतत्व की खोज म गुरुजी एकाकी यात्री के समान भटकते रहे। अधिकांश समय उन्होंने अकेले जंगलों म फल-कन्दमूल आदि खाकर बिताया। योगाचाय अय्यावजी की राय स्वीकार करके मरुत्वामला के उच्च शिखर पर एक विशाल किन्तु चारों ओर से घिरी हुई हवादार गुफा मे तपस्या और योगाभ्यास किया। फिर वह छोडकर सामाजिक सेवा हेतु आ गए। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि गृहस्थ जीवन को छोडकर ईश्वर के साथ अलौकिक तादात्म्य करना चाहिए। उन्होंने भक्त के संबन्ध म यही कहा है:

"पृथ्वी ही उसके बिछौना है, उसकी भुजाएँ उसकी तकिया।"

उस ज़माने म मन्दिर म प्रवेश केवल उच्च जाति को मिलता था। प्रत्येक जाति को अपनी श्रेणी के आधार पर एक दूसरे के पीछे पूजा स्थल से निश्चित दूरी पर ही खडा होना होता था। ब्राह्मणों म भी उच्चतम वग के ब्राह्मणों को ही मन्दिर म पूजा का अधिकार था। यह सब गुरुजी को असह्य लगा और एक शिवरात्री के कुछ दिन पहले घोषणा की कि वे शिवलिंग की स्थापना करगे। श्री नारायण गुरु ने शिवरात्री के दिन ठीक अध रात्री को नदी म गोता लगाया और एक पत्थर का टुकडा अपने वक्षस्थल से चिपकाए नदी के बाहर आए और उसे लेकर ध्यान मग्न अवस्था म आँख मूँदे तीन खंडे तक खडे रहे। प्रात: तीन बजे गुरुजी ने शिवलिंग को पीठिका पर स्थापित कर उसका अभिषेक किया। गुरुजी ने मन्दिरों म प्रवेश वजन की प्रथा को स्वीकार नहीं किया और ईषवा जाति केलिए मन्दिरों का निमाण किया। मन्दिरों के पास तालाब निमाण की अपेक्षा स्नान गृह बनवाने का सुझाव दिया। मन्दिरों के चारों ओर बगीचे लगवाए। मन्दिर म जो चढ़ावा पैसे के रूप म मिलता, उसी लोगों के कल्याण कार्यों केलिए खच करने की बात कही। धम ग्रन्थों का पुस्तकालय हर मन्दिर के साथ होना चाहिए तथा मन्दिरों के पुजारी निम्न वग के होने चाहिए। यह उनके सन्देश थे।

श्री नारायण गुरुजी ने 1912 ई. म वैदिक स्कूल के साथ-साथ सरस्वती मन्दिर की भी स्थापना की। ईषवा जाति म भी कई उपजातियाँ ह जैसे थिया, बिल्लवा आदि। इन म अन्तजातीय विवाह नहीं करते थे, किन्तु श्री नारायण गुरु ने विभिन्न उपजातियों को एक समुदाय के रूप म ढालने म सफलता प्राप्त की। उन्होंने विधवा विवाह को बढ़ावा दिया। स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। 'ताली'(मंगल सूत्र) बाँधने की खर्चीली प्रथा को निरथक कहकर बन्द करवा दिया। लड़की के वयस्क होने पर जो बडी बडी दावत देने की प्रथा थी, उसका उन्होंने विरोध किया और उसे समाप्त करने म सफलता पाई।

श्री नारायण गुरुजी ने समस्त मानव जाति केलिए जीवन भर काम किया। महान क्रांतिकारी सन्त का सन्देश है: जो भी धम हो , यही पयाप्त है कि मनुष्य सद्गुण सम्पन्न हो। उनका महामन्त्र था- एक जाति एक धम और एक ईश्वर मानव का।

गुरुजी ने सितम्बर 1928 ई. की सन्ध्या चार बजे 72 वष की आयु म समाधि ग्रहण की।

Paragraph questions & answers-

1. आयुवद पद्धति को ईषवा का देन क्या है?

संस्कृत आयुवद शास्त्रों के विद्‌वान नम्बूतिरि ब्राह्मण हुआ करते थे,किन्तु उनका संख्या बहुत कम थी और उन तक जन-साधारण नहां पहूँच पाते थे। आयुर्वदिक पद्धति का संपूण साहित्य संस्कृत म उपलब्ध था। अथात आयुर्वदिक पद्धति को जानने केलिए संस्कृत भाषा का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक था। इस महत्वपूण काय को ईषवा जाति के लोगां ने निभाया। वस्तुत: केरल का संपूण भू-भाग ईषवा वैद्‌यां और संस्कृतज्ञों से भरा था। जन-साधारण म आयुवद और संस्कृत को जीवित रखने का श्रेय ईषवा जाति के वैद्‌यां को हा है।

2. 'नानू' बचपन से हा दार्शनिक विषयां पर विचार करते थे। इसका खुलासा कब हुआ?

जब नानू छह वष का बालक था तो उसके किसी निकट संबन्धी का मृत्यू हो गई। घर म सभी लोग काफा दु:खी हुए।नानू दुसरे दिन घर से निकल गया और जंगल म छिपकर सोच विचार म व्यस्त हो गया। घरवालां ने नानू को तलाशा, लेकिन नहां मिला। बाद म एक व्यक्ति ने आकर सूचना दा का नानू जंगल म छिपकर बैठा है। मामा-मामी तुरन्त जंगल म गए और नानू को विचारमग्न पाया। उसे घर पर लाए और पूछा कि तुम जंगल म छिपकर क्यां बैठे थे? नानू ने उत्तर दिया – चाचा का मृत्यू पर आप सब बहुत दुखी थे, किन्तु दूसरे दिन हा आप सब फिर सामान्य हो गये। इस घटना से स्पष्ट है कि श्री नारायण गुरु अपने उम्र से पहले हा दार्शनिक थे और बडे-बूढां से दार्शनिक विषयां पर तक –वितक भी करते थे।

3.गुरुजी का शिक्षा-दाक्षा कैसे संपन्न हुआ?

श्री नारायणगुरु का सुव्यवस्थित शिक्षा पाँच वषका आयु म शुरू हुई। गुरु का नाम चबषंती मूत्ता पिल्लै था जो सवण थे। उच्च शिक्षा के लिए उन्ह 1876 ई. म करुनागपल्ला के आश्रम म भेजा गया। वण भेद के कारण नायर बच्चे गुरु के आश्रम म हा रहते थे और ईषवा बच्चां को आश्रम के बाहर रहना पडता था। इसलिए वरनपल्ला नामक समृद्ध और उदार परिवार म रहना पडा। नानू के कुशाग्र बुद्धि के कारण गुरु उन्ह छात्रों का नेता बनाया। घनिष्ठ मित्र कुन्हु कुन्हु पणिकर था। इसी बीच नानू को पेचिश का बीमारा हो गई तो मामा उन्ह घर वापस लाए। इस प्रकार नानू का विद्‌यार्था जीवन समाप्त हो गया।

4.श्री नारायण गुरु के गृहस्थ जीवन कहाँ तक साथक रहा?

नानू घुमक्कड प्रकृति के थे और धम परायण जीवन व्यतीत करने के इच्छुक थे। खाला समय म गीता वाचन किया करते थे। मस्तमौलापन और आध्यात्मिक तरंग को देखकर उनके संबन्धियां ने उन्ह सुधारने के लिए उनका विवाह करने का निणय लिया। पहले नानू विवाह के लिए तैयार नहां हुए, लेकिन बाद म संबन्धियां ने मना लिया। लेकिन वैवाहिक राति-रिवाज़ां ने उन्ह झकझोर कर रख दिया और वे अपने ब्रह्मचय माग पर लौट आए। लेकिन नाई ने उन्ह पत्नी के घर जाने के लिए मना लिया। वे ससुराल तो गये। लेकिन ड्योढ़ा से आगे नहां गये। उनका पत्नी ने उन्ह मिठाई और केले परोसे। नानू ने दो केले खाये और दुर जाकर पत्नी को संबोधित करके

कहा-" तुम्हारा और मेरा माग अलग अलग है। तुम अपने माग पर जाकर खुश रहो और मुझे अपने माग पर चलने दो।" इतना कहकर वे वहाँ से चले गए। अन्य संन्यासियों की भाँति नानू भी जीवन के रहस्य को जानने के लिए दैहिक बन्धनों को तोडते हुए मुक्त संसार की ओर निकल पडे।

5.श्री नारायण गुरु ने मन्दिर निमाण करने का निश्चय क्यों किया?

गुरुजी संत थे। उनकी दृष्टि से सभी मानव समान थे। उस काल विशेष की प्रथा से वे प्रसन्न नहीं थे। मन्दिर म प्रवेश केवल उचच जाति को मिलता था और उन्ह भी अपनी जाति की श्रेणी के अनुसार ही रहना पडता था। प्रत्येक जाति को अपनी श्रेणी के आधार पर एक दूसरे के पीछे पूजा स्थल से निश्चित दूरी पर खडा होना होता था। ब्राह्मणों म भी उच्चतम वग के ब्राह्मणों को ही मन्दिर म पूजा का अधिकार था। यह प्रथा उनके लिए असह्य थी और शिवरात्री के कुछ दिन पहले उन्होंने घोषणा की कि म प्रतीक रूप म शिवलिंग की स्थापना करँगा। मन्दिर निमाण केलिए कोई व्यवस्था नहीं थी। किन्तु स्वामीजी ने उसकी कोई परवाह नहीं की और कहा-यह समतल चट्टान ही आधार पीठिका होगी और म नदी म गोता लगाकर चट्टान का एक टुकडा उठाकर लाऊँगा, वही शिवलिंग होगा। श्री नारायण गुरुजी ने ठीक अध रात्री को नदी म गोता लगाया और एक पत्थर का टुकडा अपने वक्षस्थल पर चिपकाए नदी के बाहर आए और उसे लेकर ध्यानमग्न अवस्था म आँख मूँदे तीन घण्टे तक खडे रहे। प्रात: तीन बजे गुरुजी ने शिवलिंग को पीठिका पर स्थापित कर उसका अभिषेक किया।

7.दलित आन्दोलन और अय्यनकाली -डॉ.शशिधरन

मानवाधिकारों से वंचित अछूत घोषित किए गए, गुलामी और पराधीनता का अनुभव करनेवाले, जानवरों सा जीवन बितानेवाले लोग दलित कहलाए। ज़मीन्दारों और भूस्वामियों के धान्यागारों को खून पसीना एक करके भरने वाले को अछूत घोषित करके अभिजातों ने हटा दिया। दलितों के अधिकारों को पुनःस्थापित करने की लडाई का नेतृत्व बीसवीं सदी के प्रारंभ में अय्यनकाली ने किया।

भागत के अन्य प्रांतों की अपेक्षा केरल में जाति व्यवस्था का सख्त पालन सर्वाधिक होता था। जाति के आधार पर ब्राह्मण सबसे ऊँचे और परया, पुलया आदि जातियों के लोग सबसे नीचे हुए। परया,पुलया,कुरवा जैसे अनुसूचित जाति के लोगों को ही दलित कहा गया। जानवरों को छू सकते थे लेकिन एक दलित को छुआ तो सवर्ण हिन्दु स्नान के बाद ही शुद्ध हो पाते थे।

केरल के सामाजिक बदलाव में ईसाई मिशनरियों का बहुत बडा हाथ रहा है। चान्नार जाति के कई लोगों ने ईसाई धर्म को स्वीकार किया। उस ज़माने में स्त्री चोली पहन नहीं सकती थी। 1828 में दो चान्नार औरत चोली पहनकर चली तो उनकी चोलियों को कुछ सवर्णों ने चीर डाला। चान्नारों ने खुलकर इसका विरोध किया। 1859 जुलाई 26 को त्रावनकोर महाराजा को चान्नार औरतों के वस्त्र पहनने की आज़ादी को मंजूरी देकर ऐलान करना पडा।

महात्मा श्री नारायण गुरु ईषव जाति के लोगों के आध्यात्मिक और सामाजिक गुरु एवं नेता थे। सन् 1888 में उन्होंने तिरुवनन्तपुरम के अरुविप्पुरम में शिवलिंग की प्रतिष्ठा की। उन्होंने अपने समुदाय के लोगों का संगठन कायम करने और उनका उद्धार करने का सराहनीय कार्य किया।

आधुनिक केरल के इतिहास निर्माण में अय्यनकाली का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कोशिशों की वजह से केरल का दलित वर्ग आज की अच्छी-खासी सामाजिक स्थिति को हासिल कर सका है। दलितों के उद्धारक अय्यनकाली का जन्म सन् 1863 आगस्त 28 को केरल के तिरुवनन्तपुरम के निकट वड्डान्नूर में हुआ था। वे अय्यन और माला के सबसे बडे पुत्र थे। माता-पिता ने उनका नाम काली रखा था। लेकिन बडा बनने पर पिता का नाम जोडकर वे अय्यनकाली के नाम से प्रसिद्ध हुए।

काली के पिता अय्यन पुत्तलत्तु नामक प्रसिद्ध घराने के ज़मीन्दार परमेश्वरन पिल्लै के खेतिहर, मज़दूर एवं काश्तकार थे। परमेश्वरन पिल्लै ने सवा आठ एकड खेतीली ज़मीन अय्यन के हिसाब में लिखवाने की मदद की। फलस्वरूप भूमिहीन अय्यन भूस्वामी बन गया। जीवन के कटु अनुभवों से अय्यनकाली ने दलितों की स्थिति में सुधार लाने की ज़रूरत को महसूस किया। पहले उन्होंने युवकों को संगठित किया। उन्हें लगा पंचम वर्ण के लोगों को आम रास्ते से गुज़र पाने लायक सामाजिक नियम अन्याय है। कानून और न्याय केवल सवर्णों

के हाथ म थे। मवेशियों का तरह मनुष्य बेचे-खरीदे जाते थे। इसी तरह के भावनाओं ने अय्यनकाली को दलितों द्वारा झेली गई पीडा, परेशानियों से लड़ने का प्रेरणा दी।

सन् 1893 म अय्यनकाली ने एक बैलगाडी खरीदकर गाडी म सैर की। उन दिनों बैलगाडी पर सवारी सिफ सवर्णों का हक था। राह चलने का आज़ादी केलिए हुई पहली लड़ाई मार-पीट म बदल गई। दलित बच्चों को स्कूल म दाखिला होने का अधिकार पाना अय्यनकाली का दूसरा लक्ष्य था। सन् 1905 म उन्होंने वेड्डान्नूर म एक झोंपडी बनाकर पाठशाला का स्थापना की। केरल का दलित जनता का वह पहला सरस्वती मन्दिर था। सवर्णों ने उस पर आग लगाई। प्रत्याक्रमण न करके काली और साथियों ने उसी जगह पर दूसरी झोंपडी बनाई।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त म और बीसवीं शाब्दी के आरंभ म ईसाई धम के प्रचार-प्रसार के लिए केरल म आये मिशनरियों का वजह से यहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और शैक्षिक क्षेत्रों म कई बदलाव आए। दलितों का तरक्की केलिए भी उन्होंने महत्वपूण सेवाएँ की ह। मिशनरियों ने इन दलितों का धमपरिवतन किया। धमातरित दलितों ने हिन्दुओं को निरक्षर, काफिर आदि कहकर उपहास किया। यह समुदाय केलिए खतरा है,जानकर काली ने धमातरण का विरोध करने का निश्चय किया। उन्होंने श्रीमूलम् तिरुनाल् महाराज के सामने निवेदन प्रस्तुत किया और महाराज को घोषणा करना पडा कि बलपूवक धमातरण नहीं होना चाहिए।

सन् 1933 को सरकार ने मन्दिर प्रवेश समिति का गठन किया। समिति के सदस्य एकमत के समथक नहीं थे। सन् 1936 को मज़बूर होकर सरकार को मन्दिर प्रवेश का ऐलान करना पडा। इसी बीच गाँधीजी त्रावनकोर आए। 1937 को गाँधीजी वेड्डानूर आए। वहाँ हुए जलसे म गाँधीजी ने काली को 'दलितों के राजा' कहा था।

सन् 1905 को सदानन्द स्वामी नामक श्रेष्ठ योगी त्रिवेन्द्रम आए। उन्होंने हिन्दु धम म व्याप्त दुराचारों का विरोध किया। काली भी स्वामी का बातों से प्रभावित हुआ। स्वामी ने अय्यनकाली और उनके साथियों से मिलकर अपने ब्रह्मनिष्ठ मठ का एक शाखा का स्थापना की, जिसका नाम था चित् सभा। सन्1907 फरवरी म काली ने चित् सभा से विदा लेकर 'साधुजन परिपालन संघम' का स्थापना की। इस संस्था से ही दलितों को सामाजिक, राजनीतिक,शैक्षिक क्षेत्रों म पयाप्त तरक्की मिली। काली एकमत से संघ के अध्यक्ष चुन लिए गए।

साधुजन परिपालन संघम म दलितों ने सबसे पहले अपने बच्चों को स्कूल म दाखिला पाने के बारे म सोचा। 1907 से ही दलितों के अनुकूल सरकारी आदेश आया। सरकारी आदेश को अफसरों ने धँसा लिया। काली और साथियों ने स्कूल म जाकर पूछताछ की। काली ने हडताल का आह्वान किया। जब तक दलित बच्चों को स्कूलों म दाखिला नहीं दगे तब तक खेतों म काम नहीं करगे। काली ने दीवान से मिलकर 1910 म स्कूल म दाखिला होने का आदेश ज़ारी किया।

उस ज़माने म दलित स्त्रियों को सोना या चाँद से बने आभूषण पहनने की मनाही थी। वे चिकने पत्थर से बनी मालाएँ और लौह तारों से बनी चूडियाँ पहनती थी। काली ने इन आभूषणों को छोडने का आह्वान दिया।

1939 को कुट्टनाडु म मदिरा के खिलाफ़ उन्होंने अपने समुदाय का जनता को जागरित किया। सन् 1941 जून 18 को अय्यनकाली नाम के इस महान समाज सेवक का मृत्यू हुई।

Paragraph questions & answers :

1.दलितों का जीवन कैसा था?

केरल का दलित जनता को सदियों तक मानवाधिकारों से वंचित होकर जानवरों जैसा जीवन बिताना पडा। अछूत घोषित किए गए इस वग ने जिस गुलामी और पराधीनता का अनुभव किया था, ददनाक और भयानक था। धनी ज़मीन्दारों और भूस्वामियों के यहाँ गुलाम बनकर जीना इनका नियति थी। इनका जीवन खेतों-खलिहानों से संबद्ध था। धूप ,बारिश हवा सहकर खून-पसीना एक करके खेतों म काम किया। इसी कारण वे काले रंगवाले बने। इस वग का मेहनत का शोषण जिन्होंने किया था, उन्होंने हा इस वग का निन्दा का, इनको प्रताडित किया। दलितों को छूना तो दूर, सवण हिन्दु उनका परछाई तक से अपवित्र हो जाते थे। स्नान के बाद हा शुद्ध हो पाते थे। इन्ह न सावजनिक कुओं से पानी लेने का अधिकार था, न आम रास्ते से गुजरने का या विद्यालयों से शिक्षा पाने का। मन्दिर के दरवाज़े इनके लिए बंद थे।

2.चान्नार आन्दोलन कैसे हुआ?

केरल के सामाजिक बदलाव म ईसाई मिशनरियों का बहुत बडा हाथ रहा था। जब केरल के दक्षिणी छोर पर मिशनरियों का काय शुरू हुआ तो वहाँ के कुछ चान्नारों (नाडार नामक जाति के लोग) ने ईसाई धम को स्वीकार किया। ईसाई धम के प्रभाव से इस जाति के औरतों ने चोला पहनना शुरू किया। उस समय चान्नार जैसी निम्न जाति का औरत चोला नहां पहनती थी। चोला पहनने का मनाहा थी। 1828 म जब दो चान्नार औरत चोला पहनकर चला तो उनका चोलियों को कुछ सवर्णों ने चीर डाला। चान्नारों ने खुलकर इसका विरोध किया। सन् 1859 म दोबारा इसी तरह का कुछ वारदात हुई। आखिर 1859 जुलाई को त्रावनकोर महाराजा को चान्नार औरतों के वस्त्र पहनने का आज़ादा को मंजूरा देकर ऐलान करना पडा।

3.आम रास्ते से गुज़रने का आज़ादा केलिए अय्यनकाली ने क्या किया?

1893 म अय्यनकाली ने बैलगाडी खरीद ली। उस ज़माने म बैलगाडी खरादने और उस पर चढ़कर सवार करने का अधिकार केवल सवर्णों को हा था। लेकिन अय्यनकाली ने दो बैलों को बाँधकर उस गाडी म सैर का। गाडी म बैठे काली एक सफ़ेद बनियान और धोती पहने हुए थे। सफ़ेद पोशाक पहनने का मनाहा थी। कई सवण युवकों ने काली का गाडी को रोका। गाडी म रखे हथियार लेकर वे गाडी से नीचे उतरे तो युवक भाग गए। काली ने दलितों से मानवाधिकार के लिए लडने का आह्वान किया। दलितों म वे धीरे-धीरे आत्मविश्वास जगा सके। उनको अनुभव हुआ कि दलितों को, आम रास्ते से गुज़रने का आज़ादा कोई भी न देगा और दलितों द्वारा आम रास्ते से चलते रहने से हा वह अधिकार मिलेगा। इसी बात को लेकर काली ने एक बैठक बुलाई और बैठक म कई फैसले भी लिए। फैसले के मुताबिक अय्यनकाली और साथी आरालुम्मूड के बाज़ार म पहूँचे। बालरामपुरम के शालियों (जुलाहों) का गली से कई लोग वहाँ पैदल चलने आए। उन सब को रोकने के लिए वहाँ

कई लोग इकट्ठा हो गए। दोनों दल के लोगों के बीच मुठभेड हुई। इस तरह राह चलने की आज़ादी के लिए हुई पहली लडाई मार-पीट में बदल गई।

4.स्कूल में प्रवेश पाने की माँग के लिए अय्यनकाली ने क्या क्या किया?

दलित बच्चों को स्कूलों में दाखिला होने का अधिकार पाना अय्यनकाली का दूसरा लक्ष्य था। उस समय जब सवर्णों का रोब इतना प्रबल था कि सरकारी कर्मचारी एवं शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों ने दलितों के प्रति कोई हमदर्दी नहीं दिखाई। सन् 1905 में काली ने वड्डान्नूर में एक झोंपडी बनाकर पाठशाला की स्थापना की। केरल की दलित जनता का वह पहला सरस्वती मन्दिर था। सवर्णों ने उस पर आग लगाई। प्रत्याक्रमण का प्रयास न करके काली और साथियों ने उसी जगह पर दूसरी झोंपडी बनाई। नई झोंपडी को बनाए रखने का प्रयास उन लोगों ने किया। उस पाठशाला में काली के दो साथी उस्ताद बने। बाद में सरकार को स्कूल में दाखिला संबन्धी आदेश ज़ारी करना पडा।

5.धर्मांतरण के खिलाफ़ अय्यनकाली ने क्या किया?

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए केरल में आए मिशनरियों की वजह से यहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक क्षेत्रों में कई बदलाव आए। मिशनरी प्रवर्तक जनता के बीच जाकर काम करनेवाले थे। इसलिए उन्हें दलितों के मज़बूरियों को देखने का मौका मिला। गुलामों को भी उन्होंने मालिकों से खरीदकर मुक्त कर दिया। जाति को नज़र अन्दाज़ करके उन्होंने दलितों को अपने विद्यालयों में दाखिला दिया। दलित जब ईसाई बन जाता तो जाति के नाम पर हुई मज़बूरियों से वह मुक्त हो जाता था। मिशनरियों के कामों से धर्मांतरण की प्रवृत्ति बढ़ गई। मिशनरियों के आने के पहले यहाँ कई ईसाई लोग मौजूद थे। धर्मांतरित दलितों के साथ इन ईसाइयों का बर्ताव सवर्णों जैसा था। इन धर्मांतरितों को ईसाइयों ने अस्पृश्य ही माना। इधर धर्मांतरित दलितों ने हिन्दुओं को निरक्षर काफ़िर कहकर उपहास किया। वे अपने निकटवर्ती रिश्तेदारों से भी दूर रहे।

अय्यनकाली ने अनुभव किया कि यह दलितों के लिए हितकारक नहीं है। उन्होंने देखा कि दलित धर्म के नाम पर अलग-अलग हो जाएँगे और यह समुदाय की मज़बूती केलिए खतरा है। काली ने श्रीमूलम तिरुनाल् महाराज के सामने निवेदन प्रस्तुत किया। महाराज ने घोषणा की कि आगे बलपूर्वक धर्मांतरण नहीं होना चाहिए।

6.साधुजन परिपालन संघम की स्थापना क्यों हुई?

अय्यनकाली ने महसूस किया किसारे दलितों के सम्मिलित कोशिश से ही अपनों को अधिकार एवं तरक्की मिलेगी। काली ने सन् 1907 फ़रवरी में 'साधुजन परिपालन संघम' की स्थापना की। इस संस्था की स्थापना के पहले उन्होंने श्री नारायण गुरु, सी.वी.कुंजुरामन, डॉ.पल्पु, महाकवि कुमारनाशान, जज गोविन्द आदि से सलाह मशविरा किया। उन सबसे उनको आशीष मिला। इस संस्था से ही दलितों को सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक क्षेत्रों में पर्याप्त तरक्की मिली। दलितों की मुक्ति के लिए काली ने अपना जीवन ही समर्पित किया। काली एकमत से संघ के अध्यक्ष चुन लिए गए

Module -4

शबरी(खण्ड काव्य) –श्री नरेश मेहता।

लेखक परिचय-

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कवि एवं कलाकार श्री नरेश मेहता का जन्म मध्य प्रदेश के मालवा के अंचल शाजापुर म सन् 1924 के दिनांक 15 फरवरी म एक ब्राह्मण परिवार म हुआ। उनका असली नाम पूर्णशंकर मेहता है। नरेश मेहता तो उपनाम है। बचपन म ही माँ-बाप की छाया से वंचित नरेश मेहता का जीवन कष्ट-कण्टकों से ही गुज़रा है। बचपन से ही वे अन्तर्मुखी रहे।

नरेश मेहता ने हाईस्कूल शिक्षा नरसिंहगढ़ से प्राप्त की, और उज्जैन से इन्टर की परीक्षा पास की। काशी विश्वविद्यालय से बी. ए.,एम.ए आदि परीक्षाएँ पास की। फिर केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान,देहरादून से सैकंड लेफ्टिनंट का प्रशिक्षण प्राप्त किया। फिर पी.एच.डी. भी प्राप्त कर ली।

सामाजिकता ,राजनैतिकता, धार्मिकता और राष्ट्रीयता आदि के प्रति नरेश मेहता का अपना विचार है। नरेश मेहता आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत म एक निर्भीक, निडर व्यक्तित्व के कवि है। नरेश मेहता समाज के अन्धविश्वास, अन्याय, अधर्म व असत्य का जोरदार खंडन करते ह। वे विनयशील तथा ईमानदार कवि भी है। नरेश मेहता की कविताओं म गाँधीजी के विचारों का प्रभाव, छायावाद का प्रभाव, विभिन्न साहित्यकारों का प्रभाव आदि देखने को मिलते ह।

प्रस्तुत खण्डकाव्य शबरी नरेश मेहता से 1975 म रचा गया है।

इसकी कथा वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। शबरी की कथा के माध्यम से कवि ने एक ज्वलंत समस्या को उठाया है, जो प्राचीन से लेकर आज भी वैसे के तैसे दिखाई देती है। इस प्राचीन समस्या का समाधान कवि ने नवीन संदर्भों म खोजा है। शबरी म एक आशावादी स्वर मुखरित है। प्रस्तुत खण्डकाव्य के द्वारा कवि यह दिखाना चाहते ह कि निष्ठावान व्यक्ति सदा सफल होता है। यदि उसम वर्चस्व है तो वह अपनी परिवेशगत या युग के हर सारी समस्याओं या गत्यवरोधों के बावजूद ,स्वयं को ऊपर उठा सकता है और वरेण्य बन सकता है। शबरी इसका उदाहरण है।

शबरी खण्डकाव्य का सारांश-

शबरी की कथा उस समय की कथा है जिस समय सतयुग का सारा समाज त्रेतायुग म बदल गया था। अरण्य की ग्राम-सभ्यता नगर सभ्यता म बदल गयी थी। समाज म जन पद जैसी संस्थाओं का जन्म हो गया था। उत्तरी भाग म आर्यों की बस्तियाँ नागरिक सभ्यता से फैल रही थीं और दक्षिणी प्रायद्वीप म द्राविड तथा विंध्याचल म कोल-किरात एवं अन्य वन्य जातियाँ फैल गयी थीं। समाज म वर्ण- व्यवस्था घर कर रही थी। ब्राह्मण ज्ञान-तपस्या करते थे। क्षत्रिय समाज के रक्षक और पालक थे। कुछ वन्य जातियाँ भी थीं। वे पशु-पक्षियों का शिकार कर अपना जीवन-यापन कर रही थीं। इन्हीं लोगों से मिलती-जुलती एक शबर जाति थी, जो

ग्राम या नागरीय समाज से दूर विंध्याचल के वनों म रहती थी। नरेश मेहता ने शबरी का जीवन ऐसा ही प्रस्तुत किया है। लेकिन शबरी वन्य जाति की होते हुए भी पशु-हिंसा से दूर है। इसीलिए वह घर परिवार को त्यागकर पंपासर के मतंग ऋषि के आश्रम म पहूँचती है। वहाँ आश्रम वासी उसका विरोध करते ह। क्योंकि वह निम्न वग की है। इतना ही नहीं जब ऋषि उसे आश्रम म स्थान देते ह तो वे अछूत नारी के आश्रम प्रवेश को घोर आपत्तिजनक मानते ह। इस सन्दभ म कवि ने जो कुछ कहा है वह आज के युग को भी परिलक्षित करता ह।

" आचार किसी का जग म

वैयक्तिक कब हो सकता है?

है अन्य स्त्रियाँ-कन्या

जिन पर प्रभाव पड़ सकता।"

आश्रमवासियों के इस आक्षेप से मतंग ऋषि को बड़ा दुख होता है। वे सोचते ह, क्या जीवन की सात्विकता- तपस्या उच्च वग के लोगों के लिए ही है। वैराग्य रूप शबरी ज्ञानयोग तथा भक्तियोग के बल समाज की प्रताड़ना, लांछना, प्रतिहिंसा, प्रतिशोध और एकांतिक जीवन की कठोरता को सहज ही पारकर लेती है और अन्त म उस प्रशांत , तल्लीना अन्त्यज्व शबरी को परम रूप राम स्वयं आकर सम्मानित करते ह। हर युग म अच्छे काय के माग म नित्य काँटे बिछाये जाते ह। अन्ततः शबरी की निष्ठा, उसकी तपस्या, उसके 'निम्न वन्य' को 'उच्च वण' म बदल देती है।

प्रथम सग- त्रेता-

शबरी की कथा त्रेता युग की एक अत्यन्त साधारण नारी की कथा है। वह शबर जाति की स्त्री थी और उसका नाम था श्रमणा। कवि ने पहले त्रेता युग का वणन किया है।

सतयुग म त्रेता म बदलने से सारी स्थितियाँ बदल गई। वनों को काट लोगों ने खलिहान बना लिये। सड़कों का नव निमाण हो गया। नए नगर और कस्बे बस गए। राज्य और जनपद समाज म पनपने लगे। नगरों और सभ्यता को लेकर आय बस्तियाँ जन्म ले रही थीं। सभी का वण व्यवस्था के आधार पर विभाजित किया गया था। धम और नैतिकता की नींव जन मानस म पड़ चुकी थी। ब्राह्मण ज्ञान और तपस्या के कारण सब से श्रेष्ठ माने जाते थे। क्षत्रिय रक्षक और पालक थे। वैश्यों को व्यापार से तथा शूद्रों को श्रम व्यवस्था से ही व्यक्ति का संबन्ध जोडना था। क्या शूद्रों के घर जन्मा मनुष्य ब्राह्मणों के से कम नहीं कर सकता? जो सिद्धांत को न मानकर ऋषि कर्मों म विघ्न डालते थे, उन्ह राक्षस कहा जाता था। इनका जीवन दशन तो केवल हिंसा,लूटपाट,हत्या, आदि था। रेवा से लेकर कावेरी तक ये लोग बसे हुए थे। मुनष्यता से दूर, स्वयं म मस्त विंध्य वनों म शबर जाति बसती थी।उस शबर जाति म जन्मे शबरी का परिचय देते हुए कवि कहते ह कि शबरी हिंसक कुल म जीती थी पर मूलतः हिंसा से उसे घृणा थी। शबरी परिवारवालों के साथ रहना पसन्द नहीं करती थी क्योंकि अपना घर उसे बूचड़ खाना लगता था और परिवार के लोग हत्यारे। वह सोचती थी कि क्या यह पाप कम ही मेरे जीवन म लिखा हुआ है। वह प्रभु के बनाये वन,नदी,धरती को देखती कि प्रभु ने कितनी मधुरता से

इन्ह बनाया है। लेकिन मनुष्य कितना पापी है लूटपाट, हत्या आदि के अतिरिक्त उसे कोई और काम हा नहा। वह सोचती है कि क्या म अपने परिवार के बीच म रहकर अपना आत्मोद्धार कर सकती हूँ। वह सोचती है कि क्या इसी नरक म उसका सारा जीवन बीत जाएगा।ऐसे हा प्रश्नां से वह दिन रात घिरा रहती ।

एक दिन शबरा के मन म इस परिवार मोह के प्रति वितृष्णा भर गई और सोचने लगी कि अगर कोई बन्धन रखना है तो क्यां न उस प्रभु का बन्धन रखा जाए। कुल-कुटुम्ब का चिंता से तो प्रभु का आराधना कहा श्रेष्ठ है। अगर अपने जीवन को साथक करना है तो इस परिवार का मोह त्यागो। शबरा के मन मानस का यह दवंदव अपनी चरम सीमा पर पहूँचकर उसे यहा निणय देती है। अपने इस निणय को कायरूप देने के लिए वह घर-परिवार को त्याग, बच्चां को सोते हुए छोड, प्रभ का आराधना म चल पड़ती है।

द्वितीय सग- पंपासर-

एक रात शबरा अपने पति तथा बच्चां को सोये छोड पम्पासर चला आई। उसने पम्पासर के बारे म सुन रखा था कि वहाँ बडे-बडे ऋषियाँ अत्यंत तेजस्वी ह,जिनके ओजस्वी वाणी को सुनने दूर-दूर से लोग आते ह। पम्पासर म पहूँचते हा उसे लगा कि निम्न जाति के होने के कारण वह ऋषि-दशन कैसे करेगी, कैसे आश्रम म आयेगी। प्रातःकाल था, सभी स्नान ध्यान म लगे हुए थे, प्रत्येक आश्रमवासी अपने-अपने काम म लगे हुए।

वहाँ का दृश्य मनोरम था । कहा हिरण झूम रहे थे तो कहा आम का डाला पर तोते बोल रहे थे। ऋषि कन्याएँ पोखर से जल ला रहा थीं, यज्ञ वेदियाँ सुलग चुका थीं और वेद पाठ आरंभ हो गया था। वहाँ के सारे वातावरण म शबरा को शांति का आभास हो रहा था। सभी स्थान हरे-भरे थे,दूर कहा एकांत म मयूरा अपने प्रिय का रासलाला देख रहा थी। प्रत्येक प्रकार के रंग-बिरंगे फूल वहाँ खिले हुए थे, भौरे कमल रस का पान कर रहे थे। इन सभी मनोरम दृश्यां को देखती हुई शबरा मतंग ऋषि के आश्रम के पास पहूँच गई। वहाँ यज्ञ का पावन दिव्य गंध वायु म समाहित थी।

मतंग ऋषि के आश्रम के पास हा पोखर म शबरा ने सबसे पहले स्नान किया। फिर वह ऋषि के आश्रम के फाटक पर दशन के लिए बैठ गई। पाठ खत्म होने पर ऋषि जब मंडप से उठकर आए तो फाटक पर एक स्त्री को देखकर सकुचा गए। ऋषि के सामने आते हा शबरा ने उनके चरणां को प्रणाम किया। ऋषि के पूछने पर कि वह कौन है, उसका मन संशय ग्रस्त हो जाता है। वह मन हा मन सोचती है- यदि मने उन्ह बता दिया कि म अंत्यज हूँ तो क्या ऋषि मुझे आश्रम म रख लगे, अगर ऋषि रख भी लगे तो बाका तपोवन वासी उनका जीवन दूभर कर दगे। एक तो अंत्यज, दूसरा शबर जाति का और उस पर स्त्री, यह सब उसके निणय को डगमगाते नज़र आते ह। वह हिंसक प्रकृति को छोड़ अध्यात्म पिपासा के लिए ऋषि मतंग से कहती है—आप के दशन से मेरा जीवन धन्य हो गया। म शबर जाति का हूँ और आप के चरणां का सेवा आज से मेरा इष्ट है। मतंग इस पर आपत्ति करते ह और कहते ह कि तुम्हारा घर परिवार होगा, संबन्धी हांगे। शबरा कहती है कि म उन सबका मोह त्याग आई हूँ। मुझे अपने अंत्यज होने का सीमा का ज्ञान है। म तो आप के चरणां म हा पड़ी रहूँगी।

ऋषि लोकापवाद से डरते ह और उसके वहाँ रहने का निणय अन्यों को सौंप देते ह। साथ ही यह भी कहते ह कि अगर तुम उच्च वग की होती तो यहाँ कोई प्रश्न ही पैदा न होता।

शबरी का व्यक्तित्व यहाँ अत्यंत निखर कर आया है। जब वह कहती है कि प्रभु तो सारी सांसारिकता से श्रेष्ठ ह, अग्निरूप ह जिनकी पवित्रता को छूकर अंत्यज भी पवित्र हो जाते ह। क्या उच्च वग को ही आत्मोन्नयन का अधिकार है? प्रभु तो सब के लिए समान ह। फिर उनकी आराधना को सीमाओं म क्यों बाँधा है? शबरी के इन शब्दों को सुन ऋषि उसके मन म जो भक्ति की भावना है और आत्मोन्नयन की भावना है, से तथा उसके आध्यात्मिक स्वत्व को समझ जाते ह। शबरी अपने व्यक्तित्व से ऋषि को प्रभावित करती है और कहती है कि वह केवल प्रभु के चरणों की सेवा करना चाहती है। उसके लिए जीवन-यापन की कोई समस्या नहीं। वह गायों की सेवा म संतुष्ट है। प्रभु के श्रीमुख से प्रवचन सुनकर वह भव-सागर से पार हो जाएगी। अगर गुरु की कृपा हो जाये तो यह पापिन हरिगुण गाकर , प्रभु की आराधना कर इस संसार रूपी भव-सागर से तर सकती है।

मतंग ऋषि उसके व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित हो जाते ह और उसे निश्चय दिलाते ह कि वह अवश्य ही भक्तों म श्रेष्ठ होगी। उसम तो स्वयं प्रभु बोल रहे ह। ऋषि उसे अपने आश्रम म गायों को संभालने का तथा आश्रम की सफाई का काय सौंप देते ह। शबरी ऋषि की कृपा से अत्यंत भावविह्वल हो जाती है, उसकी आँखों म आँसू आ जाते ह। वह ऋषि के चरणों म प्रणाम करती है। ऋषि मतंग उसे आश्रम के भीतर लाते ह। सभी आश्रमवासी हैरान होतो ह। शबरी गोशाला म जाती है । उनकी आँखों को देख उसे लगता है कि मानो वे मौन निमंत्रण उसे दे रही हों। वह एक-एक के पास जाती है। किसी को सहलाती है, किसी का सिर सूँघती है, किसी को आलिंगन म लेकर प्यार करती है। मतंग उसकी यह लीला छिपकर देखते ह—और सोचते ह न जाने यह अब तक कहाँ बह रही थी। उन्ह विश्वास हो जाता है कि यह निश्चय ही पुण्यात्मा है। न जाने कौन से कर्मों से यह भटक गई थी। वे सोचते ह कि आश्रमवासी संदेह तो अवश्य करगे लेकिन अगर यह प्रभु की लीला है कि उन्होंने इसे यहाँ भेजा है तो वे मेरा माग दशन भी करगे।

तृतीय सग: तपस्या:

काव्य के तृतीय खण्ड म शबरी का तपस्विनी रूप दिखाया गया है। तपोवन से दूर पम्पासर के एक कोने म वह कुटिया बनाकर रहने लगती है। वह अपने इस परिवतन से स्वयं विस्मित होती है, उसे अतीत की स्मृति हो आती है कि कैसे बचपन म उसकी सखियाँघोंसलों से कच्चे अण्डे खा जाती थी तो उसे कितना अमानवीय लगता था। कटते पशुओं का कँपकँपाना उसे स्वप्न म भी दिखाई देता था। वह सोचती रहती थी कि मानव कितना निदयी है। संसार म सब कुछ असुन्दर तो नहीं। भगवान ने सरिता, तारे ,सूय, झरने, फूल आदि कितने सुन्दर बनाये ह। ये घास किसने बनायी है जिसको पशु चरते ह। गुरु की आज्ञा के अनुसार उसने स्वयं पर अंकुश रखना सीखा। ब्राह्म मुहूत म उठना, स्नान ध्यान करना, कुश तथा फूलों को चुनकर लाना, सूर्योदय से पहले गौशाला म गायो को दाना-पानी देना, दूध दुहना, गोबर से नित्य आंगन लीपना, तोता मैना से बात करना,

प्रत्येक यात्री का आवश्यकता को पूरा करना, नित्य आश्रम का सफाई तथा आते समय प्रवचन सुनना, उसने अपना नित्य कम बना लिया था।

संध्या होते ही अपनी कुटिया वापिस आ जाती। उसे प्रतिक्षण ऐसा लगता जैसे कोई उसके साथ है। वह बेसुध हो जाती थी। इतनी तन्मय हो जाती थी। शबरी सभी कर्मा को प्रभु का श्रृंगार समझकर सम्पादित करती थी। वह प्रकृति म प्रभु का आनन्द लेने लगी थी। अब शबरी शिष्या से भक्त बन रही है जिसने अपना सवस्व प्रभु को अपण कर दिया है। यह जब तेजस ज्योतिपुंज म परिवतन होगी तो प्रभु तीनों लोकों को छोड़ उसे दशन देने आयगे।

चतुथ सग: परीक्षा:

शबरी के चतुथ सग म शबरी के व्यक्तित्व, धम और भक्ति-भाव का परीक्षा है। तपोवन म केवल मतंग ऋषि ही शबरी के महाभाव को समझते थे कि अब वह संपूणता म प्रभु म लीन हो रह थी। मतंग अपने प्रवचनों म उसका उल्लेख करने लगे थे। प्रत्येक युग म ऐसे लोगों का परीक्षा होती रही है। अपमान,बदनामी, पीड़ा तथा दु:ख देना लोगों को प्रिय लगता है फिर शबरी को ये लोग क्यों छोड़गे। मुनि-साधु होने पर भी ये द्वेष भाव को त्याग नहीं सकते। सभी आश्रमवासी ऋषि के प्रति शबरी को लेकर संदेह व्यक्त करते ह और एक अछूत नारी के आश्रमवास पर आपत्ति करते ह। यहाँ कवि ने उच्च वग का निम्न वग के प्रति व्यवहार दशाया है। मतंग ऋषि को लेकर बहुत ही लोकापवाद फैलता है। अन्य तपोवनवासी ऋषि को बुरा-भला कहते ह। मात्र प्रभु कम के स्थान पर वण को महत्व दिया गया है। धम सामाजिकता के ऊपर नहीं है। इसलिए शूद्रों को यज्ञ और पूजा करने का अधिकार नहीं है। पम्पासर चाहे सावजनिक है लेकिन शूद्रों के लिए वजित प्रदेश है। शबरी को ऋषि ने किसकी आज्ञा से रखा है। ऋषि शायद आश्रम का मयादा भूल गये है। यह घोर अनाचार है कि उन्होंने एक शूद्र को घर म स्थान दिया है, मतंग की तो बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। अपने कथा और प्रवचन म नित्य शबरी का प्रसंग तथा उसे सावित्री और अनसूया के साथ गिनना इससे बड़ा और पाप इस संसार म और क्या हो सकता है।

सभी तपोवन वासी एकत्र होकर शबरी और मतंग के प्रसंग को लेकर उत्तेजित है। वे इसका प्रभाव अन्य आश्रम की स्त्रियों और कन्याओं पर मानते ह कि अगर ऐसा आधार रहेगा तो इन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। उन्ह समाज का निणय स्वीकार नहीं तो उन्ह बहिष्कृत करना ही होगा। यहाँ कवि स्पष्ट कहना चाहता है- समाज म गली –सड़ी परंपराओं और रूढ़ियों को तोडने वाली ज्ञानी पुरुषों को भी समाज अनेक बार बहिष्कृत कर देता है। समाज का निणय सुनकर ऋषि मन ही मन खिन्न होते ह। वे सोचते ह कि इस साधु-समाज म कब धम का मम जागृत होगा। अपने को श्रेष्ठ समझना कितना भ्रम है। क्या धम तत्व से वणाश्रम मयादा ऊँची है? जब तक शबरी साधारण जन थी वह तबतक शूद्रा थी, लेकिन अब वह शक्ति है, देवी है। अब वह जन्म-मरण से मुक्त वैराग्य रूप है। ऋषि शबरी का महत्व बतलाते हुए कहते ह कि यदि पम्पासर है और रहेगा तो केवल शबरी के कारण। वे समाज के बारे म कहते ह—समाज तो प्रत्येक युग म अच्छे मनुष्य के माग का काँटा बना है। यहाँ कवि धम तत्व को मयादा से ऊँचा माना है।

ऋषि मतंग ने समाज के निणय को ठुकरा कर तपोवन से दूर जलाशय के निकट कुटिया बनाई जहाँ रहकर शबरी को योग भक्ति, ज्ञान और दशन सिखलाया। लेकिन अभी उसकी परीक्षा शेष थी। वह थी उसके पवित्र जीवन की। उसके एकांतिक जीवन पर समाज ने घोर लांछन लगाए। शबरी के दिन प्रतिदिन तेज रूप को सुनकर मुनि द्वेष-भाव से जल रहे थे। उन्होंने उसे वहाँ से निकालने का उपाय सोचा। वे उसके परिवार से जाकर मिले तथा उसे वहाँ से उठाने की योजना बनाई। समाचार को सुनते ही शबरी का पति कुछ साथियों को लेकर वहाँ आता है। वह अत्यन्त क्रोधित है कि उसने हमारी शबर जाति की नाक काट दी है। तपोवन वासी उसे समझाते ह कि आधी रात के समय उसके घर जाना तब वह कुटिया म अकेली रहेगी। लेकिन मुँह को बाँधकर अँधेरे म ले जाना। आज अमावास का दिन है और तुम्हारी इष्ट देवी का दिन है। तुम्हारे लिए कितना मंगलमय है कि बातों से वे खोई हुई स्त्री प्राप्त होगी। ऐसी बातों से वे शबरी के पति को बहका कर उत्तेजित करते ह।

रात के समय वह अपने साथियों के साथ शबरी के कुटिया के पास जाते ह वहाँ वे पेड़ों के पीछे छिपकर बैठ जाते ह। आधी रात के संकेत को समझकर वे कुटिया की ओर बढ़ने लगे। उन्ह अन्धकार म खिड़की से प्रकाश छनकता कुटिया दिखाई दिया। सभी उस खिड़की के पास जाते ह। वहाँ जाने पर देखते ह कि सिंहासन की प्रतिमा के आगे दीपक जल रहा है और शबरी प्रभु आराधना म लीन है। पावनता की उस मूर्ति को देखकर शबर आश्चय चकित रह गये। कुटिया म से चंदन की महक आ रही थी। उन्ह कुटिया के अन्दर किसी जादू-पुरुष का आभास होता है। दरवाज़ा खोलकर जैसे ही वे अन्दर पहूँचे , वे डर से काँपने लगे। शबरी प्रभु म लीन थी और दीपक जल रहा था। शबर दल सोच रहा था कि उसे पकडने से अगर वह चिल्लाई और ऋषि के कानों म स्वर पड़ा तो हम सब मुसीबत म पड़ जायगे । उन्होंने योजना बनाई कि सभी एक साथ दबोच लगे और उसका मुँह बाँधकर शीघ्र ही ले जायगे। ज्योंही वे शबरी के निकट गए, वहाँ शबरी के चारों ओर आग का कुण्ड दिखाई दिया। धीरे –धीरे आग का कुण्ड उन्ह सुलझाने लगा और वे चिल्लाने लगे।

कुछ क्षण बाद आहट हुई। ऋषि मतंग के आते ही कुटी म जादू सा समाप्त हो गया। ऋषि ने उनके आने का कारण पूछा। शबर दल काँप उठे और क्षमा याचना केलिए ऋषि के पैरों म गिर पड़े। ऋषि ने उन्ह क्षमा कर दिया और प्रातःकाल से पहले ही वे वापस लौट गए। शबरी को इस परिस्थिति का बिलकुल भान नहीं हुआ। वह तो प्रभु आराधना म लीन थी। ऋषि उसकी कुटिया का द्वार बंद कर अपने आश्रम म लौट आए। सूर्योदय होते ही शबरी चैतन्यमय होकर बाहर निकली। वहाँ जो कुछ हुआ इसके बारे म शबरी को कुछ पता भी नहीं था।

पंचम सग: दशन:

अंतिम सग दशन म प्रभु शबरी को दशन देते ह। शबरी और मतंग को लेकर जनमत अभी भी उग्र रूप धारण किये हुए था। उस समय सीताहरण की कथा सभी जान चुके थे,लेकिन सभी विवश थे कोई क्या कर सकता था? जो यज्ञों का रक्षक हो, उसी की नारी का हरण हो गया और वही आर्यों का रक्षक वन-वन म घूम रहा है। थोडा संतोष था कि उनके साथ लक्ष्मण है। मतंग तो त्रिलोकदर्शी थे। वे भगवान की इस माया को जानते थे कि प्रभु

मानव रूप धारण कर धरती को साथक बनाने आए ह। प्रभु का वन म आगमन सुन वे निश्चिंत हो गए। उन्ह विश्वास था कि अब शबरी प्रभु के दशन पायेगी।

संध्या वंदन कर ऋषि अपने आश्रम से बाहर आये तो उन्होंने कुछ लोगों को दूर से आते देखा। शबरी महाभाव से अपनी कुटिया म बैठी थी। उसे संसार का इस समय ज्ञान नहीं था। भीड़ के निकट जाते ही दो देव पुरुष ऋषि के चरणों म झुक गए। ऋषि ने मन ही मन कहा कि यह तो राम और लक्ष्मण की जोड़ी है। मतंग ऋषि उन सबको लेकर आदर सहित आश्रम म आए। सभी चुप चाप अपने आसन पर बैठे थे। कुशल क्षेम के बाद ऋषि ने उनके आने का प्रयोजन पूछा। पम्पासर के निवासी चुप्पी साधे हुए थे। उनकी चुप्पी तोडते हुए राम अत्यन्त विनम्र स्वर म बोले- इस शांत तपोवन म आकर मेरा जीवन साथक हो गया है। पम्पासर म आपका सूना आश्रम देख मेरे मन म बहुत कष्ट हुआ। तब ऋषि का महत्व बतलाते हुए राम ने कहा है कि इन अज्ञ जनों ने यह कैसा प्रवाद फैल रखा है? चौदह समस्त भुवनों म भी मतंग जैसा ऋषि नहीं है। जो ज्ञान और भक्ति का साधक हो, ऋषियों का आराधक हो, वह मयादा या नियम का बाधक नहीं हो सकता। वह तो साक्षात् धम रूप है जिनकी तपस्याग्नि को छूकर सभी स्वण हो जाते ह। मने शबरी की तप गाथा सुनी है। सम्पूण मानवता उसकी गाथा सुनकर सुगन्धित होगी। शबरी अंत्यज है तो क्या हुआ? वह भक्ति का रूप है, शिव शक्ति का रूप है।

उसी समय श्वेत वस्त्रों म शबरी पहूँचती है मानो कोई अकलंक तपस्या हो। उसके नयन करुणा से भरे थे। उसम दिन का तेज था। रात्री की नीरवता थी। मानो उपवन और आश्रम के फूल उसी से सुगन्धित थे। वह ऐसी पावन थी मानो पवित्रता उसी से है। वह उस भीड को चीरती हुई ऋषि के सम्मुख पहूँच जो पूजा-प्रसाद लाई थी, वह उसने गुरु के समक्ष रख दिया। प्रसाद के रूप म वे केवल जंगली बेर थे। राम को श्याम वण म देख उसे लगा तो मानो पृथ्वी पर प्रभु ने रूप धारण किया है। उसे पता चल गया कि ये ही राम लक्ष्मण ह जो उसे दशन देकर कृताथ करने आए ह। उसने पम्पसर वासियों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह गीत गाती हुई प्रभु म तल्लीन हो गई। उसका सारा तन-मन पुष्पित हो रहा था। उसके भीतर आनन्द खिल रहा था। यह संध्या उसे विराट लग रही थी। वह आनन्द के आँसुओं म डूब रही थी। यह भगवान की ऐसी महाकृपा है जो इस दुगम अरण्य वन म प्रभु शूद्रा शबरी के घर आए है। उसकी संपूण इन्द्रियाँ आँखों म खींच आई थी। आज तो सागर स्वयं नदी के द्वार पर चल कर आया था। यह आकांक्षा कब से थी कि नदी को सागर कभी पुकारे। यह प्रकृति के नियम विरुद्ध आज पहली बार हुआ, वरना नदी ही समुद्र म आकर मिलती है। प्रभु के आगमन पर वह इतना तल्लीन हो गई कि उसे कुछ नहीं सूझ रहा कि वह उन्ह कैसे बिठाए? किन मंत्रों से उनका आवाहन करे? और कौन-सा गीत गाए। क्या प्रभु केवल फूलों की माला स्वीकार कर लगे, कैसेवह उनके चरणों को धोये, उन्ह पंखा झुलाएँ? प्रभु को वह किस नाम से पुकार, उन्ह क्या संबोधन दे। ऐसे ही प्रश्नों म घिरी वह प्रभु से कहती है कि म तुम्हारे ही भरोसे हूँ प्रभु। मुझे मुक्ति दो। इस कुल कलंकिनी शूद्रा को तुम बड़भागी बना दो। वह प्रभु के चरणों म श्रद्धा और विनय भाव से झुकी हुई थी। उसके आँखों से प्रभु के चरण भीग गये थे। प्रभु राम ने उसे उठाकर आदर सहित आसन पर बिठाया। प्रभु ने पूजा-प्रसाद के निमित्त बेर की प्रशंसा की। शबरी मन ही मन सोच रही थी कि बेर भी सभी मीठे नहीं होंगे। उनके मन म अत्यंत संकोच था कि प्रभु को खाने के लिए क्या द।

वह अपनी शंका को मन म दबाये हुए थीलेकिन भगवान तो भाव के भूखे ह। प्रभु को उत्सुक देख शबरी के आँसू सूख गए। वह प्रभु को स्वयं पहले चखकर बेर देगी जो बेर मीठे होंगे। वह सहज-भाव से प्रभु को चखकर मीठे रसाल देने लगी और प्रभु सहज-भाव से खाने लगे। लक्ष्मण राम के इस व्यवहार से हैरान थे और सोच रहे थे कि प्रभु को कोई आगर ज़हर भी दे दे तो बिना किसी झिझक के पी लगे। तब प्रभु ने पम्पासर वासियों को संबोधित करते हुए कहा है कि –म आज पावन हो गया हूँ।

शबरी जगज्जननी है। मुझे तो पहले ही इस परम सती की कथा मालूम थी। जिसपर इस सती की कृपा हो जाय , उसे जन्म-मरण के इस चक्र से मुक्ति मिल सकती है। शबरी को तपस्वियों म शिरोमणि घोषित करते हुए कहते ह कि त्रेता युग म शबरी से ऊपर कोई श्रेष्ठ भक्त नहीं। यज्ञादि सब शबरी से सिद्ध है। म सती का यह स्वागत सत्कार पाकर आज कृतज्ञ हो गया हूँ। प्रभु के यह वचन सुनकर शबरी अत्यंत भावविह्वल हो प्रभु से बोली कि अब म एकक्षण भी वियोग सहन नहीं कर सकती। शबरी के मुख पर उस समय एक दिव्य तेज था। इसके साथ ही वह स्वग लोक को चली जाती है। उस क्षण सब उस परम सती की जय-जयकार करने लगी। मतंग ऋषि अविचल खड़े रहे। उनके मन म अत्यन्त संतोष था। आज वह शूद्रा से शक्ति बन गई थी।

चरित्र चित्रण-

शबरी- राम कथा म युगीन स्वर की दृष्टि से शबरी एक महत्वपूण कथापात्र है। नरेश मेहता ने शबरी के माध्यम से राम कथा की आज की प्रासंगिकता की ओर इशारा किया है। शबरी मतंग ऋषि की शिष्या है जो आश्रम म राम-लक्ष्मण के आने पर उनका भक्तिभावपूण स्वागत एवं आतिथ्य करती है। नरेश मेहता ने शबरी की जन्मगत निम्न वर्गीयता को कम-दृष्टि के द्वारा वैचारिक ऊध्वता म परिणत करने का प्रसंग प्रस्तुत किया है। भक्तिन व्यक्तित्व की अपेक्षा शबरी का आत्मिक संघष ही उसके चरित्र को आज के संदभ म अधिक प्रासंगिक बनाता है।

शबरी जब रक्त से भीगे हथियार नदी म साफ़ करती है तो धरती की सुन्दरता को देखकर कहती है कि भगवान ने कितनी मधुर और सुन्दर चीज़ बनायी है, परन्तु मनुष्य कितना पापी है जो यह नहीं जानता कि हथियार का प्रयोग कर जीव हिंसा करने से क्या मिलेगा। शबरी अपने पूव पुण्य के फलस्वरूप सोचती है-

“कौन जन्म का पुण्य जगा
भ्रमण शबरी के मन म
पाप कम ही लिखा चुका है
क्या मेरे जीवन म।“

वह सोचती है कि क्या मेरा सारा जीवन इसी नरक म रहना पडेगा। इसी तरह के विचारों के परिणामस्वरूप शबरी म भगवान की भक्ति के प्रति विश्वास जागता है-

“सब बन्धन से श्रेष्ठ कहां है
....
अच्छा है प्रभु आराधन।“

समाज,वग,वण तथा परिवेश की जडता से मुक्ति की प्रक्रिया जिस श्रम-विधान के द्वारा चरिताथ हो सकती है, शबरी के चरित्र म वही सामाजिक प्रयोजन मूत हुआ है। शबरी की अपनी वग-चेतना के साथ यह आत्म चेतना भी प्रखर है। शबरी मतंग ऋषि की शक्तियों का बडा साथक समाधान प्रस्तुत करती है-

"म समझी प्रभु है अग्निरूप ऊपर।

....

जिनकी पवित्रता को छूकर।"

आधुनिक दृष्टि को आन्दोलित करनेवाली शबरी के चरित्र की मूल विशेषता है, उसका मानव-प्रेम। शबरी की भक्ति अत्यन्त व्यापक है जो मानव और प्रकृति म प्रभु के दशन करती है-

"उन नयनों म करुणा थी

और थी पवित्र पावनता,

उसको सब प्रभुमय लगता

थी उसम प्रभु की प्रभुता।"

शबरी को वर्णविद्वेषियों द्वारा मानसिक तथा शारीरिक यातनाएँ सहनी पड़ती ह किन्तु इससे उसकी वैचारिकता का स्वरूप और भी प्रखर हो जाता है। और इसी बीच प्रभु राम का आश्रम म आगमन उसकी वैचारिकता और तप –गाथा पर प्रामाणिकता की छाप अंकित कर देता है।

कवि शबरी के जूठे बेर चखने के प्रसंग म उसकी बुद्धि-संगत व्याख्या प्रस्तुत करता है। जंगली बेर मीठे-कड़वे दोनों प्रकार के होते ह। अत: शबरी स्वभावत: चख-चखकर मीठे बेर प्रभु को अपित करती है, जिससे कि प्रभु को कड़वे बेर खिलाकर आतिथ्य को लांछित न होने दे।

आज के अछूतोद्धार आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य म शबरी का चरित्र अपने पारंपरिक स्वरूप के बावजूद एक नयी अथवत्ता प्रदान करता है।

मतंग ऋषि

"चौंके मतंग , वह समझ गये

कीचड म कमल खिला है यह

होगी अछूत, पर जाने किन

जन्मों का पुण्य खिला है यह।"

प्रस्तुत पंक्तियों से मतंग ऋषि की प्रखर दृष्टि का परिचय मिलता है। वे मानवीय स्नेह की मूर्ति ह। शबरी की दीन वाणी सुनकर और उसके भक्त-रूप को इस कृपा पर आपत्ति करते ह।

मतंग ऋषि आश्रमवासियों का यह रूख देखकर खिन्नावस्था म सोचते ह---

"कब धम-कम जागेगा

साधु-समाज के मन म

अपने को श्रेष्ठ समझना

दम्भ नहा तो क्या है?"

मतंग ऋाष त्रिकाल दर्शा ह।उन्ह ज्ञात ह कि एक दिन प्रभु राम का आगमन आश्रम म होगा और वे इस शूद्र नारा का उद्धार करग। वे यह भी जानते ह कि भगवान धरती को साथक करने आ गये ह। शबरा प्रभु का कृपा शरण म जायेगी। और यहा हुआ। जब आश्रम म राम का आगमन हुआ तो वे कहते ह-

"मिथ्या प्रवाद यह कैसा

फैलाया अज्ञ जना ने ,

है क्या मतंग के जैसा

चौदह समस्त भुवना म।।

इस प्रकार प्रस्तुत काव्य म मतंग ऋाष म विवेक दृष्टि,मानवीय स्नेह, त्याग और निष्ठा का उदात्त स्वरूप दिखाई देता है।

सप्रसंग व्याख्या काजिए-(Annotations)

1. "सब बन्धन से कहा श्रेष्ठ है
   उस प्रभु का हा बन्धन
   कुल-कुटुम्ब का चिन्ता से
   अच्छा है प्रभु आराधन।"

शबरा नामक खण्डकाव्य श्री नरेश मेहता से लिखा हुआ है। इसम

उन्हाने शबर जाति का एक नारा का आध्यात्मिक उन्नाति का कथा का मामिक वणन किया है। उन्हाने इस खणडकाव्य के माध्यम से यह दिखा दिया है कि अगर इच्छा शक्ति और आत्म समपण है तो कोई भी व्यक्ति ,चाहे वह अंत्यज हो या नारा ऊँचे से ऊँचे पद तक पहूँच सकता है। वह हर तरह का बाधाओं को आसानी से पार कर सकता है।

प्रस्तुत भाग शबरा नामक खण्डकाव्य के प्रथम सग का है। कवि इसम त्रेतायुग का परिचय देते हुए वहाँ के सामाजिक सभ्यता के बारे म बताते है। साथ हा विन्ध्याचल के वनांतरा म जीवित रहे शबर जाति का भी परिचय देते ह। शबर जाति का जीवन-दशन तो हिंसा,लूटपाट और हत्या आदि ह। लेकिन उस जाति म भी ऐसी एक नारा थी जिसको बिलकुल अपने कुल और कर्मा से घृणा था। उसे अपने घर म जीना दुष्कर सा लगा था। वह सोचती थी कि सब पारिवारिक बन्धना से श्रेष्ठ बन्धन है,प्रभु का प्रेम बन्धन। कुल या कुटुम्ब का चिन्ता से कितना अच्छा है, प्रभु का आराधना करना। कवि कहना चाहते ह कि निम्न जाति म जन्म होने पर भी पूव जन्म के पुण्या के कारण शबरा (श्रमणा) के मन म अध्यात्म भाव और भक्ति जाग पड़ी।

1. “क्या आत्मा की उन्नति केवल

है उच्च वर्ग तक ही सीमित?

प्रभु तो है सबके पिता, भला

उनका आराधन क्यों सीमित?”

(1st paragraph is common to all annotations)

प्रस्तुत भाग शबरी खण्डकाव्य के दुसरे सर्ग का है। यहाँ शबरी के माध्यम से कवि समाज के जाति-पाँति तथा उच्च-नीच भाव के प्रति अपना मन्तव्य व्यक्त करता है। शबरी अन्त्यज होने पर भी उसके मन में आध्यात्मिकता और प्रभु भक्ति जागृत होती है। अपने कुल के क्रिया-कर्मों के प्रति घृणा करनेवाली शबरी एक दिन अपने पति और बच्चों को त्यागकर पम्पासर के मतंगाश्रम में पहूँचती है। वह मतंग ऋषि से अपना परिचय देते हुए कहती है कि वह अन्त्यजा है, लेकिन आध्यात्मिक उन्नति चाहती है। वह आगे कहती है कि प्रभु-सेवा ही उसका इष्ट कार्य है। तब मतंग ऋषि उससे कहते हैं कि आश्रम में शबरी को शरण देने के लिए सब की सम्मति तो अनिवार्य है। अगर तुम उच्चवर्ग की हो तो कोई सवाल ही नहीं उठेगा। यह सुनकर शबरी मतंग से पूछती है-क्या आत्मा की उन्नति केवल उच्च वर्ग तक ही सीमित है। प्रभु तो सबके पिता है। फिर क्यों, कैसे उनका आराधन सीमित हो जाता है।

यहाँ शबरी समाज में दिखाई पड़नेवाली जातीयता या छुआ-छूत के प्रति अपना विरोध प्रकट करती है। वह खुलकर कहती है कि प्रभु के आगे सब समान है। और वहाँ वर्ण-वर्ग नहीं बल्कि मन की पवित्रता या भक्ति ही मुख्य है। ऐसी शबरी को पुण्यात्मा समझकर मतंग ऋषि अपनी शिष्या बनाते हैं।

एक एक शब्द में उत्तर लिखिए

1.शबरी किसकी रचना है

उत्तर- श्री नरेश मेहता।

2.शबरी पहले किस नाम से जानती थी

उ- श्रमणा।

3.शबरी को अपना घर क्या लगता था

उ- बूचड़खाना।

4.शबरी अपने घर-परिवार क्यों छोड़ देती है

उ. अपनी आत्म उन्नति के लिए।

5. शबरी कहाँ चली जाती है

उ- पम्पासर। मतंगाश्रम में।

6.शबरी में किन किन का संगम है?

उ--महाभाव के साथ ज्ञानबोध एवं भक्तियोग का संगम है।

Question bank

1. एडवड टाइलर कौन है?

    (प्राचीन मानव वैज्ञानिक, अथ शाश्त्री, भिषग्वर, दशक)

2. भारतीय परंपरा के अनुसार समस्कृति के कितने अवयव है?

    (एक, पाँच, सात, दस)

3. सोशल एवं कल्चरल डाइनैमिक्स किसकी रचना है?

    (बैजनाथ, पिटरिम सोरोकिन, एस.राधाकृष्णन, मैडम क्यूरि)

4. सामाजिक विचारधारा किसकी रचना है?

    (रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, महादेवी वमा, दिनकर, अमिताभ बच्चन)

5. सभ्यता बबरता के विरुद्ध जीवित रहने की दशा है- यह किसने कहा?

    (डाँ सैमुअल जाँनसन, डाँ बैजनाथ पुरी, राजेन्द्र प्रसाद, दिनकर)

6. चेतनात्मक संस्कृति ------------ पर निभर होती है।

    (ईश्वर , इन्द्रियाँ,धन, भक्ति)

7. संस्कृति के प्रयोगात्मक पक्ष को -------- कहते है।

    (सभ्यता, संकल्प, भावना, आध्यात्मकता)

8. स्वामी विवेकानन्द के गुरु का नाम क्या है?

    (श्रीरामकृष्ण परमहंस, श्रीबुद्ध, महर्षि अरविन्द, रमण महर्षि)

9. भारत के राष्ट्रीय आदश है----------।

    (त्याग और सेवा, धन-दौलत, खाना-पीना, कमाना-खच करना)

10. शक्ति ही जीवन और --------- ही मृत्यू है।

    (कमज़ोरी, भय, लालसा, हिम्मत)

11. हम किसकी तरह सहनशील होना चाहिए?

    (सूरज , पृथ्वी माता, कण, इन्द्र)

12. हम नेतृत्व के स्थान पर -------- करना चाहिए।

    (सेवा, शासन, डकैती, भोग)

13. स्वामी विवेकानन्द का जन्म स्थान ------------ है।

    (कलकत्ता, मैसूर, केरल, पंजाब)

14. स्वामी विवेकानन्द किस पर विश्वास रखते ह?

(सन्यासियों पर, नवयुवकों पर, बूढ़ों पर, विदेशियों पर)

15. जो अपने आप पर विश्वास नहीं करता वह --------- है।

(आस्तिक, नास्तिक, डरपोक, आलसी)

16. भारत एक है- किसकी रचना है?

(पं.जवहरलाल नेहरू, रामधारी सिंह दिनकर, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी)

17. प्राकृतिक दृष्टि से भारत वष को कितने भागों म बाँटा है?

(तीन, पाँच, आठ, नौ)

18. भारतवासी कहाँ खप नहीं हो सकते?

(अपने पडोसियों के बीच, अन्य देश के लोगों के बीच, पहाडों के बीच, जंगल म)

19. भारत ने कब राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की?

(1947 म, 1845 म , 1950 म,1960 म)

20. इन म कौन सा पहलू लोकसत्ता के नहीं?

(राजनीतिक व्यवस्था, आथिक रास्ता, नैतिक प्रणाली, नैष्ठिक ब्रह्मचय)

21. लोकतन्त्र एक ----------------- है।

(धम, कम, विश्वास, नीति)

22. संस्कृति और अपसंस्कृति किसका लेख है?

(किशन पटनायक, वीरेन्द्र कुमार, महादेवी वमा, जैनेन्द्र कुमार)

23. मनुष्य की स्वायत्तता ही---------------- है।

(संस्कृति, सभ्यता, यश, लडाई)

24. संस्कृति म --------- तरह की विकृतियाँ आ सकती है।

(दो, पाँच, नौ, सात)

25. श्री नारायण गुरु का जन्म किस जाति म हुआ?

(ईषवा, नंबूतिरि, पुलया, नायर)

26. श्री नारायण गुरु को ------ ने योगाभ्यास सिखाया।

(अप्पाजी, अय्यावजी, केलप्पजी, माडन)

27. आयुर्वेदिक पद्धति का संपूण साहित्य ------ भाषा म उपलब्ध है।

(तमिल, संस्कृत. मलयालम, अंग्रेज़ी)

28. नारायणगुरु की मृत्यू कब हुई?

(20 सितंबर 1928 म, 25 अकतूबर 1945, 30 दिसंबर 1950

29. शिक्षा के समय नानू का घनिष्ठ मित्र कौन था?

(कुन्हु कुन्हु पणिक्कर, रामन पिल्लै, विवेकानन्द, श्रीमूलम तिरुनाल)

30. श्रीनारायण गुरु के गुरु का नाम क्या था?

चेम्बषन्ती मूता पिल्लै, सदानन्द स्वामी, गाँधीजी, परमेश्वरन)

31. नारायणगुरु को कहाँ उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भेजा ?

(करुनागप्पल्लि, कोट्टयम, तिरुनक्करा, कोल्लम)

32. अय्यनकाली का जन्म कब हुआ?

(1863 आगस्त 28 को, 1860 जुलाई 16 को, 1910 जून 12 को)

33. अय्यनकाली के माता-पिता कौन थे?

(अय्यन और माला, माडन और कुट्टी, वेलू और चिरुता, पीतांबरन और मालू)

34. किसने अय्यनकाली को दलितों का राजा कहा?

(गाँधीजी ने, महाराज स्वाति तिरुनाल ने, श्रीनारायण गुरु ने , ज़मीन्दार परमेश्वरन ने)

35. श्री नारायण गुरु ने कहाँ शिवलिंग की प्रतिष्ठा की?

(चावक्काडु म, अरुविप्पुरम म , चात्तन्नूर म, वडानूर म)

36. केरल की लित जनता का पहला सरस्वती मन्दिर कहाँ था ?

(वड्डान्नूर म, तृत्ताला म, चेतला म, अम्बलप्पुषा म)

37. काली के पिता किसके काश्तकार एवं मज़दूर थे?

(ज़मीन्दार परमेश्वरन, कुट्टन पिल्लै, मूता पिल्लै, श्रीमूलम तिरुनाल महाराज)

38. साधुजन परिपालन संघम का अध्यक्ष कौन था?

(अय्यनकाली, नारायणगुरु, माडन, नानू)

39. इन म किस जाति के लोग दलित या अवण कहा जाता था?

(नायर, क्षत्रिय, पुलय, नंबूतिरि)

40. अय्यनकाली की मृत्यू कब हुई?

(सन्1941 जून 18 को, स1898 जुलाई 16 को, 1935 सितंबर24को, 1950 अकतूबर 25को)

41. अय्यनकली का पहला लक्ष्य क्या था?

(राह चलने की आज़ादी, पढे-लिखने की आज़ादी, मन्दिर म प्रवेश पाना, कपडे पहनने की आज़ादी)

42. गौतम बुद्ध के अनुसार मनुष्य की मूल स्थिति ----- की है।

(सुख, दुख, आनन्द, संताप)

Answers…

1.प्राचीन मानव वैज्ञानिक	2. पाँच	3.पिटरिम सोरोकिन.
4.रवीन्द्र नाथ मुकर्जी.	5. डॉ.सैमुअल जॉनसन	6.इन्द्रियाँ
7.सभ्यता	8.श्रीरामकृष्ण परमहंस	9.त्याग और सेवा.
10.कमज़ोरी	11. पृथ्वी माता	12. सेवा
13. कलकत्ता	14. नवयुवकों पर	15. नास्तिक
16.रामधारी सिंह दिनकर	17. तीन	18.अन्य देशों के लोगों के बीच
19. 1947 में	20.नैष्ठिक ब्रह्मचर्य	21. धर्म
22. किशनपटनायक	23. संस्कृति	24. दो
25. ईश्वर	26. अय्यावजी	27. संस्कृत
28. 20सितंबर 1928 में	29. कुन्हु कुन्हु पणिक्कर	30. चेम्बषंती मूता पिल्लै
31. करुनागप्पल्लि	32. 1863 आगस्त 28 को	33. अय्यन और माला
34. गाँधीजी ने	35. अरुविप्पुरम में	36. वडडान्नूर में
37.ज़मीन्दार परमेश्वरन	38. अय्यनकाली	39.पुलय
40.सन्1941 जून 18 को	41. राह चलने की आज़ादी	42. दुख